

88.11

34/87

SKM - 34/87

Size: - 29.5 x 22.5 cm

Leaf - 45

SKM 34/87 1

SKM 34/8

॥ अथ नावन्दनवनकौ ॥ रा ॥



॥ ६० ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीश्रीराधावल्लभो जयति ॥ श्रीकृष्णं चेत
 न्यं च जयति ॥ ॥ अथ श्रीकृष्णविवाहविलासलिरव्यंते ॥ दोहरा ॥
 जयवरमानों रूपनिधिरमनिधि जयनंदगंगा ॥ जयदंडावनरंगानि
 धिवरविदारसुनवांवा ॥ १ ॥ बालविनादव्याहकी उत्कंवा ॥ रामआम
 वरी ॥ तूतो ओघटवडौ कनैया ॥ अहै कालिदेखिवेतो कौंहसि
 हसिकहतजसौ दामईया ॥ डुलहनियरमसलौंना सुंदरिवा
 कामो कौल गौवलईया ॥ मोहनकारो कुंवरह मासै निरखिसजन
 कहा करहि वडेया ॥ अजहं समजिछां डिदै चोरी हृदह ही मांघन
 कीनैया ॥ वडे गोपधर होत सगाई सरधीर धाम को अधि कैया ॥
 ॥ १ ॥ छाडो मेरे ललन अजौ लरिकाई ॥ अहै कालिदेखिवेतो
 कौंववा व्याहकी वात चलाई ॥ डरिहै मास सुसर चोरी मुनिहसि
 हैं नई डुल्लेया सहाई ॥ उवटौं कवा उंगुं कुं चुटिया वलि देखिन लौ
 वर करि हैं वडाई ॥ मातवचन सुनिवोले मोहन नई वडी वेर कालि
 तौन आई ॥ जव सोइ वो कालितव कै है नैनं मूंदित वयो देकना
 ई ॥ उठिक हो प्रातन यौज गुलीदै मुदित महरिलषि आतुरताई
 परमानंद दास की जीवनि सकुचिलगे जननी उरलाई ॥ २ ॥ मैया
 मोहि असी डुलहनि नावै ॥ जैसी यह काफ़ काट ठोंनी तुं मकि तुं
 मकि ग्रह आवै ॥ करि करिया कर साल अपनें कर मोहि परोमि
 जिमावै ॥ करि अंचर पट ओटव वासों ठाढी व्यारि दुरावै ॥ लये
 उठाइ गोद वैगरे करि मनुहारि मनावै ॥ अहौ मेरे लाल कहौ
 वावा सो तेरो व्याह करावै ॥ नंदराइ नंदरानी हिलि मिलि सु
 षसमूह वटावै ॥ सरसिक गिरधर वातें सुनि आनंद उरन स
 मावै ॥ ३ ॥ गग आसावरी ॥ लालन लाडू लाजै ॥ नैंक मोहि दह्यो
 विलोवन दीजै ॥ अपने लाल की व्याह करों गी वडे गोप की वेटी
 दिन दिन वासों रंग रहै गौ जीवन जीवन जोटी ॥ अपने लालन



कौंदुलहनिल्याऊंक
छुलालनतैंछोटी॥ना
मदेवकौस्वामीअंतर
तामीमागतमांषनरो
टी॥४॥रागआसावरी॥
सुंदरसांवरेवलिजां
उ॥मयनदैदधिदेउंमा
षनप्यारेमोहननाम॥
अपनेलालनकोव्याह
करौंगीदृषनानगोप
कीवेटी॥हाहामैयाक

वहिकरेगीमोतैंदुलहनछोटी॥एसवावालवरातचलहिगेहंवै
तांगोडोली॥दाऊजजवचवरदोरिहैमैयाविहसिकलोली॥रंगरं
गअंवरसवैपहरिहैंकेसरिनीजीचोली॥परमानंदप्रचुपानषवा
चतवीरीओलाओली॥५॥रागसारंग॥मैंदेयीकुंवरीदृषनान
की॥जननीसंगआईनंदरावरसोनारूपनिधानकी॥पगजेहरि
कंचनकीसोहैंतनकसीपऊंचीपांनिकी॥धंगवारीगरद्वेलरमो
तीतनकतरकुलीकानकी॥कछुचुकुटीसुजाएँहीटेटीविनु
सरकामकमानकी॥जौहधनुषचितवनिअनियारीमूरतिनि
पटअथानकी॥लैवैवीहसिगोदजसोमतिमनमेंअसीगानकी
सरदासप्रचुमदनमोहनहितजोरीएकसमानकी॥६॥रागसा
रंग॥अपनौहैंतागवदौंतवमाई॥जौआवैमेरैसदनवधूह
षनानगोपकीजाई॥सकुचनिवातचलाइसकतिनहिकारो
कुंवरीकजाई॥गधारूपउजागरमानौंकुलीसरदजुजाई॥दे
वपिअदिनगतिमनाऊजोयहचिंताजाई॥लगैपुण्यफलजोगै

जगतजसजवयहैजुरैसगाई॥ पूरणहोंहिमनौरथसवहंजोहरिहं
हिंसहाई॥ वीरनप्रयोंकहतहिंफरकौवांमनैनसुषदाई॥ १॥ जथा॥
यहवेटीदृषनानडुलारी॥ अश्रुतरूपअवहिमैंदेधीमोहिससतेरील
लितारी॥ २॥ जनकमनकयैजनीडुहंपगकरकंकनीजुविराजतना
री॥ तनकतनकतरकुलिकाननिमैंडुलरीकंवकनकषगवारी॥ ३॥
हमरेकछुइकनागवडेतैंअवलगितौयहरहीकुमारी॥ नित्यजसो
भतिकेइहैमनौरथहलहस्यामडुलहनीप्यारी॥ ४॥ नहिनसुतात्रि
शुवनमैंअैसीमुरिमुरिमहरिलेतवलिहारी॥ नवलसखीपुनियहै
सगाईमनवचकरिजियमांजविचारी॥ ५॥ जथा॥ हसतहसतराधा
घरआई॥ वासुतकैंहितसुनिरीमैयाहंजसुमतिलैकंवलगाई॥
हमषेलनगईकुतीनंदरावरहरषिहरषिहसिनिकटबुलाई॥ मो
तनचितैचितैटोटातनकछुइकआंघिनमैंमुसिकाई॥ अरुइक
वातकहीललितामैंललितारुकैंअतिमननाई॥ तोकैंनऊत
वीनतीकीनीमोहिववाद्यनानडुहाई॥ कहांलगकहोंरीहेतम
हरिकौपौरीलगायठवनमोहिआई॥ नवलसखीपुनिएवातैं
मुनिफूलीफिरतसुअंगनसमाई॥ ६॥ यथा॥ पूछतिजननिक
हांकुतीप्यारी॥ किनतेरेंनालतिलकरुचिदीनौंकिनिमांथौगु
हिमांगसवारी॥ १॥ खेलनगईनंदकैंवोरेंजसुमतिकह्यौऊव
रिह्यांआरी॥ तिलचामरीगोदगोजापुरफरियाफारिदईनडी
सारी॥ २॥ मेरोनावपूछिपूछिवावाकोतेरोनावपूछिदईहसि
गारी॥ मोतनचितैचितैटोटातनकछुसवितातनगोदपसारी
३॥ बोलिलईदृषनाननवनमैंहसिहसिपूछतकहतडुलारी
परमानंदनावतीजोरीडुऊदंयतिमिलियहैविचारी॥ ४॥ दो
हा॥ दृषनाननृपतिकह्योघरनिमोंकन्यादीजैकाहि॥ व्याह
नजोगपनईअवैसुनडुवातचितलाहि॥ ५॥ कीरतिरांनीयोंक

हो सुन जंघोष के राइ ॥ गर्ग वचन सुधिकी जिबे जन्म समै सुख दाइ ॥ २ ॥ रा
ग मूहा ॥ प्रथम हिं श्री गुरु रूप सनातन ध्याइये ॥ रसिक गवरि गणपत्यग
रो समनाइये ॥ श्री वृषनांन कुंवारि व्याह सुख गाइये ॥ वृज दंडावन मंग
ल मोद वटाइये ॥ वटाइ मंगल मोद तन मन निरविघ्नान सिराइये ॥ विना
देवें स्याम स्यामां यौं ही जन्म गमाइये ॥ सिमिटि सह चरित ललित ललि
तारीति सुनिमन नाइये ॥ प्रथम श्री गुरु रूप जे जे श्री सनातन ध्याइये ॥
परम सुमौल सिरोमणि कीरति राती है ॥ मंत्र कियो वृषनांन राइ स
नमांती है ॥ कन्या व्याहन जो गपन रजिय जानी है ॥ कर क का जनहि
विलव कछु उर आनी है ॥ तुरत विप्र बुलाइ पवयौ जाऊ वृज पति
नंद के ॥ सुन्यो ज सुमति सुवन सुंदर तिलक करि मुख कंद के ॥ विप्र



नंदी शरय जंघोष वनि मिलि आदर कियो ॥ नवन नृप न निरविमो
हन मुसकि विज अपनो कियो ॥ रतन बचित गज दंत हेम हो की धरी
सदगुण रूप निधान तहां वैठे हरी ॥ मंगल कलम पुजाइ सवनि मां
नी ररी ॥ मंगल गाय कि सोरी गाव तरंग नरी ॥ नरी रंग उमंग रंगी लीन
दज सुमति सुवन रे ॥ ललित नाल विमाल उपर तिलक अछित

॥अथ नावकुम्भतिलकको॥ध॥

दिजधरे॥बडनागयाईयहसगाईदानजाचिगकोदिये॥जगनाथव
लिराधापतियेदेखिछविमवजगाजिये॥१॥कवि॥आवतजातहै
गोपिकागोपसुनंदकेआंगनजीरवडाई॥वाजतनेरिमृदंगनिसान
मुगावतमंगलचारवधाई॥नांतकेगांवतेनांतसुताकीसुआईलडै
तेललाकीसगाई॥ब्रजराजसवैधनवारिदियोजसुधाकहैमोहिसवै
निधिपाई॥२॥नंदगांवमैआनंदसिंधुवद्वोसुलहरिजिकोरउठी
धमडाई॥जामैवृजजनमीनकलौलकरैसुतौआईललाकानवा
नसगाई॥जाचकदानसुनाइनरेमवगोपनिलैघरवातबुटाई॥सिं
धुसुताकीसुचोकधरैपतिफूल्योफिरैतहांनंदकोनाई॥३॥राग-
विलावल॥आजललाकीहोतसगाई॥आवौरीगोपीजनमिलिकै-



गावौमंगलचारवधाई॥चोटीचुपरिगुहंसुनतेरीछांडौचंचलला
वृषनांतगोपटीकोदैयवैसुंदरजांनिकन्याई॥जौतुमकौयांना
तिदेखिहैकरिहैकहावडाई॥पहरौनखनवसनअमोलिकउनकौ
देऊदिषाई॥यहसुनिनंदकुंवरउठिआतुरवैनीवैठिगुहाई॥नख
सिषअंगसिगारिमहरिमणिमोतिनकीमालायहराई॥वैठेआ
इरतनचौकीयरनरनारिनकीजीरसुहाई॥विषप्रवीनतिलकदि
योमस्तकअछतचापिलियौअपनाई॥वाजतनेरिदोलअसदे

लकनौवतिधुनिघनघोरसुहाई॥परमानंदनंदकैआगनअमरनगरप
 होयनिऊरलाई॥१॥**रागविलावल**॥आजुसमैसखिपरमसुहाई॥वृष
 नानगोपटीकौदियवयौस्यामसुंदरकीहोतसगाई॥जुरिआएसवगो
 पओपसौनरतारीवालकतसनाई॥कंचनमणिमयजटितसिंधासन
 तापरवैठेकुंवरकनाई॥कंचनधारधरेदधिरोरीरुकमश्रीफलसौं
 जसजाई॥तिलककियौद्विजललितनालपैवाजिउगीनेरीसहनाई॥
 चटीअटनियरकनकछटासीगांवहि सुंदरिगीतसगाई॥तैसेइधुर
 हिनिसानविविधिरंगदसौंदिशाननलौंधुनिछाई॥मेवाबांटतमहरि
 जसौधावृजजुवतिनिकीगोदतराई॥नंदराइजैसैंधनवरैकंचनम
 णिमोतिनऊरलाई॥आवैगीदिनपांचसातमैलगनललाकीयहसु
 निपाई॥निरघिगदाधरनैननिकौफलनंदगांवआनदअधिकाई॥२
प्रायथा॥न्यौतेनैयावंधुइंडुसवचकुंदिसितेमनौंचंदहिआवै॥नरि
 नरिउलारतनमोतिनकेछवि सौरतनचोकमैलावै॥तीयरवागोपाट
 पदंवरचिनिचिनिनितनकेसैलवनावै॥चकुंदिसतेंआवैगोपीजनदे
 षतदामिनिसीदरसावै॥घरघरधुरहिनिसानविविधिरंगगरजत
 घनधरनीधरगवै॥धेवतव्याहउमाहसवनकेराधारधाकहिसचु
 पावै॥३॥**रागधनामरी**॥नातईन्यौतनकौंचलीसुनिकीरतिरांनी
 व्याहलडैंतीकुंवरिकौआयोसुषदांनी॥रतनजटितरथवैठिकैप
 कुंचासुषदाता॥मुखराहीसोगांवहैसुषराहीमाता॥हरधिमिलीन
 रिनेहसौंपाहरमंपारी॥वहनिनैयामावापकौंनानीसुकुमारी॥न्यौ
 तौदीनौंआहकौमनमोदवटायो॥धूरनिमावैसायकीदिननियतौ
 आयौ॥न्यौतौदेकीरतिचलीवरसांतेंआई॥जिमकिचलेफिरिना
 तईवाजेव्याहवधाई॥पटनूपनसकटनिनरेचलीरथचढिगोपी॥
 गांवगीतसुहावनेंछविदामिनिलोपी॥गोपवरंगनिचढिचलेकीउ
 गजअवारी॥वरसांतेंकौनीयरैनौवतिधुनिनारी॥महीनानवृषनौ

नजसनमुषअविधाय ॥ गाइवजाइलडाइकैरावरलैआए ॥ औरसक
लहजनागरीज्योतेंजुरिआई ॥ जननजननचडंओरतेंनंपुरधनिछ
ई ॥ यहराईकीरतितवैअरुधाधायारी ॥ पायलगीनवनागरीदईधच
रंगसारी ॥ यहरावनिहजवधुनिकीकरिकुंवरिकीनांनो ॥ जगभग
जगभगकैरहीनहिजातवषांनो ॥ चौरौवारीमोलहैतिहिंपुरकौमा
ई ॥ औरसवैविधिआहकीमुषरालेंआई ॥ गोयसनामधिवैविकैयह
रावोगे ॥ इंदुइंद्रसमकनंयेधनवरषनलागे ॥ चंदनयलिकारचिबुनैरे
समषगकीने ॥ लैआयेसोनातईलषिखविमैनीने ॥ परसरामप्रनुकीह
याकृआवतिगांवै ॥ रीजिकुवरिदृषनांतकीतीयरिपहिरोवै ॥ १७ ॥ रागसा
रंग ॥ चलततेरेआहकीअववात ॥ मेरोकहौतूमनिरेमोहनतजिचोरी
कीघात ॥ वारैवांनिवडैतैसीबुधितातैसजनसकात ॥ धरहीदृधदहीव
इतेरोकाहेकोपरधरजात ॥ सबगुनसुजगसुलछिनसुंदरराधागोरैगा
त ॥ मूरलगनआवैगीअवहीसांऊदुपहरीघात ॥ रागमेरवा ॥ १८ ॥ सज
नीआनंदउरनसमावै ॥ वरसांनैदृषनांतलगनलिषिपवैदयोतंदगा
व ॥ घोरीघोरीधेनविविधिरंगसोनितांगंवैगांव ॥ नृषनमणिगणपार
नाहिनेसोधनदेषिचलाव ॥ गोयसनाकरिलगतलीनोमगनकैयु



नगाव दासमीरालालगिरधरदुलहकीवलिजाव ॥ १९ ॥ रागगौरीवा

एजूनवलवछेरीकुंवरछवीलेवरसांतेतेआईज॥ तुमकारनगंतीके
 कांकारश्रीवृषनांनपगईज॥ वृषनांतराश्यगईदीनीलगनकेंसंगअ १
 इयौ॥ काकीजातीवहनिफूफिनव्याहआगमगाइयौ॥ गार्थेगिरध
 रनिमातामोदवरधीमेहसौं॥ पहिराइअचरजपठईकीरतिस्नेहसम-
 धतिनेहसौं॥ घोरीप्रथमअरघदैलीनीकीनीवज्रतवधाईज॥ लौनउ
 सारेनवनउजारेश्रीदामादिसधाईज॥ सधाइयवईनिधुनकेंसंगीतने
 दनिसांनचै॥ लजैयगधवधावनीअसरूपकौंतनमनपचै॥ चौकमां-
 निकचौपधामधिरतनकंचनजटमई॥ घोरसारअनूपजातिसिरहिवा
 धनिसेलिई॥ ताहिपूजनदोउहजरांणीआपनआवैज॥ तवहिद्विज-
 वरवोलिवडेवरतिनपैवेदपढावैज॥ वेदमंत्रपढाइमंगलगाइइधधि
 वावही॥ मंत्रगांठिवंधायतापरवारिदैधनआवही॥ बांदिमेवादेतस
 धियनिलेतललितअसीसकौं॥ चलतधरवडनागनीकैचरनखुवाव
 तसीसकौं॥ नवसमधिनसांनेहयौंहुजपतिपांवधारेज॥ ताकेउदि-
 तउपरैनामुदितपीठसवारैज॥ सोहतपीठसवारियोंकस्योघोरियां-
 किधौंदेविया॥ वकसीसलैवजईसकीफूलेखुवीलीसेविया॥ नृषन
 सोनिजघोरियाकैरचितहलहतातकें॥ इनतैंअधिकसकैक्योंवनें
 येलेतमनहरिमातकें॥ दोउरंगंतीवैविछाजैलालहिंतेलचटांवे
 ज॥ पाइनिजसुषघोरियाकाविधुलवधाईगावैज॥ वधाईमुनिकेघो-
 रीवलकैमहलनिकटबुलावही॥ चढौधूलपढाइहरितिहिंमंदवां-
 नीगावही॥ नवलघोरीदिननिधोरीअवरहानीजावती॥ प्रलंवअरि
 पदरांवनालेगुनअनृतमिलावती॥ ताकीपूंछलटकिसवारयद्वव-
 उठियांज॥ सबजाताहैकोमलतापृथुअनियारीसीप्रियांज॥ पुठि
 यांप्रगटविशेषदरपनजहांतहांकाईलसैं॥ धरंमूरतिमहाकोतुक-
 घोरियांकेंतनवसैं॥ धरवौहरिगिरगजजिहंवलप्रलेकोजलसोधि
 यो॥ ताहिवरघोराधमारिकेंयेपारीयेयोधियो॥ घोरीसोनाकोसागर

कहि कौतुक येरीज ॥ ताके लछिन अवन निसु निति न जाते है वैरीज ॥ सु
 वन यी वासी सकुपर अवन मन के हरन है ॥ सुवन सुष को सदन आस
 न सुवन छाती चरन है ॥ तन कंक चन के कचोरा माय मुख असे सौव न्यो
 पछिताहि विधिकहि दू सरो को रज और जिहि असे सौठ न्यो ॥ ताके नैन नि
 काई के निज गुन गरवी लेज ॥ श्री गोकुल चंद च को रिल लित लुनी
 लेज ॥ लुनी ले दोऊ ललित लोचन कुवर देयो चाह ही ॥ यह चारु उर
 विस्तार की छवि सुवन ता अवगाह ही ॥ सहन सील रक्ताइ की निधि
 देषि दोई की जिये ॥ गोप घोरी के चरित कहि वलीय हस घजी जिये ॥
 ताके चित न ही ठहरत जूरंग छिन छिन आरज ॥ तिहि मोहे है मोह
 नी यों जगत हिय न लें चोरज ॥ जगत को चोरे सुरति मन सोई सोह
 नी ॥ आवरुंगा गिदि गों ना अंग निवाधि गधी मोहनी ॥ तान तरंग नि
 में चपलता प्रगट कलकत देषिये ॥ वाट आहत कवच है हरि सुख
 अनंग निलेखिये ॥ ताके जीन लगाम लगो मनि कूं मक ऊवेज ॥ आ
 छेरत नावली रचना करि उपर अंग हदावेज ॥ दावी जु उपमा के लि
 ये अंग अंग कछु को मल कहें ॥ मन कूं न वधन तडित उडगन एक वा
 सी कै रहें ॥ पाटीय पदे जगमगे अरु सिरि लंत सुहावनी ॥ ऊलक
 मोती वनी जाल रिगर्थ लागि गुहावनी ॥ ताकी रुनु कुनु ऊल मलि
 यों नथ नांक फुलावेज ॥ वीले नंद दुहाइया दियो मन हिनु लावेज
 मतनु लावे सवनि कौटुजर जे से सव वडे ॥ नाल चंद्र पद चरन चं
 दा चक्र सम अरि उरगडे ॥ बाल धी के उपर नागी रति व फूल समूह के
 मन कूं सोना धान फुली बीच बीच मखतूल के ॥ मेरें आर है सुनघ
 री कुल मंडन लालजू ॥ वारती महतारी उर की वन मालजू ॥ वार वा
 र अने करत न नि अनाथनिको है दर्द ॥ प्रथम वनी विनायगी को न
 व वछेरी छवि नई ॥ करत को विद विविध विधिको वेद अपनी वि
 धि करे ॥ आरु अगम करै तिहि विधि मंत्र पढि अवन नित नरे ॥

ग

घोरीहीसीहैहरषीहैतिरषिवृजजनपहचानीजू॥जैजैकहैसुजनगनजै
 जैदेवनिवांतीजू॥देववातीजैगरजैननविमाननिहीछए॥कुसु
 मवरिषाहोतहैअसवारजवहलहैनए॥जंगचौरासीजुनंशुरसु
 रवजेरागनिमिले॥नादसादसुहांवनेंअतिआनतिहसवरेपिले
 घोरीअमृतवाजेवाजैगाजैमंगलमेहाजू॥आछेचमरटंगवैगावैका
 लधूतसेदेहाजू॥गावैसहोदरसुमुखओरहीसुतानातेगोतकी॥आ
 नंदधरिमाहिआइयेपुनिअघटजशोमतिपोतकी॥सहजसुंदरि
 कुंतीघोरीअवकहांछविमायगी॥कोतिगअनंगमरजादविनहीफ
 वीफिरतविनायगी॥घोरीजवअतिगतिविस्तारीजू॥तवषिजिख
 वासिनिमोंकह्योडरिकेंमहतारीजू॥खीजिअपनेंमोंकह्योतुम
 गहंकाहिनजाऊरे॥लालकौषिजिवोसहोतुमनोंनमरोखाऊरे
 वामकरमेंवागगजैताजिनोंकरदाहिनै॥दृष्टिलगतीताहिनासत
 घोरियाकेंनाहिनै॥वनिवैगेजिहिबुनिचतुरनमनिदिनवहलहण
 रोजू॥मोंनोयाहीमैगढिकाटोस्योघोरीअसवारोजू॥ऊजरोअसव
 रदलहकेलिघोरीअतिवढी॥मोंनोनेंदऊवारहियैप्रथमतेइतनों
 पदी॥घनोंधूधटकाडिजवहीनवायपगआगेंचलै॥कवकुंधरतीछं
 डिनोचतमनुमिलीमोहनललै॥पौरिउपनेंदवडेवावाकेंसबचलि
 आएजू॥तिनकीपतनीतवहिंसुनतहीतिलकसुलाएजू॥तिल
 कलाईपुनिनचाईप्रेमहीकीपौरिरी॥जिहिवीचिपरिकेंजवछुडा
 एतववंधेहेजेवरी॥नीलनामनिचलकुफूफानचनपुनिकाकन
 कें॥सुवाकुसुवलेआदिनांचतसरवामनमथमथनकें॥घोरियो
 रीप्रतिनचततेजेकवकुंनोहिननचे॥मेरेमामाजिलाडिलेरूप
 गुणगणकेसचे॥रूपसांचेतचनमोंमांजसाधरजसदेवहै॥तीस
 रोडुकुंकलसुदीवाजशोमतिकोसेवहै॥लगीपाछेरतिकहैंकुंन
 ईकाहिनघोरिया॥मेरोपतिपयादोपथमेंअसवारनंदकिमोरि

यां॥घोरीकरतजुहारवडेनकौलेतललितअसीसजू॥गुरजनसबहीसि-
 हांतेकरधरतहंसीसजू॥सीसवरकरधरिकहैंअनिलाघपूरनपाइये॥
 नैंतभवअंगहोंहिंसुनिसधितउननिरधिरअघाइये॥वारनौंवारेंसोध
 त्यकरआरतीनीतरलये॥सवासिनीकौनेगरांनीजांवतेमनकेदये॥
 जबसिरमौरधरंचुटियांहनचालेजू॥तवकांयेहैंवैरनिकेदलगदस
 बहालेजू॥फूलेहैंकुलसंतसंततरहतलीलानिकटिजो॥मगननिस
 दिनयाहिसुषमैरहतनीजेमधुपजो॥गइजूचुटिचलेचंडोलनहूल
 हडलहनिकारनैं॥कहांलगिनईफूलितनमनवलीजहैंवारनैं॥
 २०॥रागैरहं॥इतसुहागउतघोरीगांवैं॥डुंदिंसिआलीअैसौआ
 नदछांवैं॥ढोलकतालमृदंगवजांवैं॥वीनप्रवीनरंगवरखांवैं॥ने
 रिसुधरमहनाइमिलांवैं॥नवलनगारिनिगतिउपजांवैं॥सहच-
 रिसुषमिलिरससरसांवैं॥रागिनीकीमूरतिदरसांवैं॥२१॥रागय-
 रज॥मिलिगांवैंनारिडुंङ्गपुरकी॥वरसांनैंनंदीश्वरकी॥इतसु
 हागउतअतिलडघोरीजबुछविसौंकोकिलतरकी॥धरधरधुर
 हिंनिसानविविधिरंगगोपिननीरनईनरकी॥इतनौवतिउतदे
 वडुंदनीधुनिछाइगईअंवरधरकी॥डुंदिंसितेलकुलिलउव
 टनैंछुविसरसातजुगलवरकी॥मंजनकरिपुनिपटपहरांवैंमु
 षमरवटकीकेसरकी॥करैसवासिनिडुंदिंसिआरतिकरवा-
 रतअगुरीचटकी॥नरिअजुलीचडुंदिंसितैनागरिमोतिनकीव
 रषावरषी॥डुंदिंसिमहदीकौंडलगवनिरचिरहीवरनकमल-
 करकी॥फूलिरह्योवृजव्याहवधायेकछावतिहियमेंहरषी॥रा
 गगोरी॥२२॥अरीउठिदेपिनैंननिकललेषिविनाइगसांवैरौ॥
 अरीघोरीनवलअरीतापैंनंदकुंदरअसवारविनाइगसांवैरौ॥
 घोरीखुरीउठाइनाचतचमकचंदाचार॥चासोंपाइनियेंजनीछ-
 विचलतजनजनकार॥छातीछेलसोआरसीअंगअंगअति-

छवि देत ॥ स्पाम सुंदर कव कृताये जाई कु किलेत ॥ जीन अरुण प्र
वीन जगमग पेदी पीत सुवंद ॥ अंग अंग निरूप की निधिरा जत गो कुल चं
द ॥ कान कतरनी काम की विच कलगी डुल नि सुदेश ॥ मोहरी मोतिन वा
गरा जत सो नित श्री वां केश ॥ ललित मुख नरि पान मानौ रत न जटित ल
गाम ॥ दाहिनें करता जि नौ अरु वाग गहं कर वाम ॥ विना ॥ पुगी उवी



मानौ घटा कारी पोंछ वार सुदार ॥ धनौ धूंघट काहि घोरी घर घर फिर
त दुवार ॥ विना ॥ अथ मही उपनंद कै अह आण मदन गुपाल ॥ ताई
तिल कवनाइ की नौरा जत नाल विसाल ॥ विना ॥ आण घोरि सुनं
की वधु आरत पौ करिलेत ॥ जौ मोह मरें लाडिलौ असी डुल हनि जौ
हरि देत ॥ विना ॥ वारौ छवि तिऊं लोक की या की दुह निरूप अपार
इक दिन देखी तीज खेलत दामिनि सीध मकार ॥ विनाइ गी ॥ आये
नैया वलिराम के ठठि नानी मुरि मुसिकात ॥ सुनि हो देवर सां व
रे अवत जि छोरी की घात ॥ विनाइ गी ॥ नचत गावत आइ संग स
विनाय गी ॥ वर सां नै दृष नांत की सुता वर निहं अवताहि ॥ य
रम राम अनिराम सजनी कछावति वलि जाहि ॥ ॥ ॥ ॥

॥मनःनावविनायगीकोधरश्रि॥१॥

॥अथनावकालकेमहदीदत॥८॥



॥अथमहदीवनेन॥रागगोरी॥महदीस्यामसुंदरकरचिरचिहाथनिपा
इलगांवें॥आईसिमटिसकलवृजसुंदरिगीतधुनीननिगांवें॥कनक
धारनरिघोरिधरीअतिनंदअजरछविपांवें॥देतसवनिकोंमहरिरो
हनीआनंदरंगवठांवें॥अपनेअपनेपांनिलपेटतछवि सौंमीडिछु
डांवें॥कनकलतासीकोउकोउलडकतजसुमतिआनिदिधांवें॥व



विषयकमदनमोहनपियाविहसिमकुविसचुपांवें॥सूरदासनिजमह

॥ अथ चावुवटनौ कृष्णकौ होता ॥ ७ ॥

कृ० वि०

७

लटहलमें व्याहमुहागलडोंवे ॥ २४ ॥ अथ तेलवर्तन ॥ रागगौरी ॥ तेलच
 ढावें मिलिदृजतारी ॥ हेमजटितमनिचौकीतापरवैवेहें लालविहारी ॥
 सालसुरंगतानिद्वलहपरविविजुवतीकरलीये ॥ ताकेमध्यपकवांनवि
 विधिधरिअरगधरगछविकीये ॥ सुंदरचारसखीसाहेधरितिनकरवां
 धीडोरी ॥ हरदहाथकरितेलचलवेंद्ववहरदमधिघोरी ॥ तिनयुवति
 निकीओलितिमैपकवांनवानकौदीनों ॥ उवटनकरिद्वलहप्यारे
 कैसवसधियनिघुनलीनों ॥ गावतहरिधितपरममुदितमननवतरु
 नीदृजवाला ॥ मायमुदितवडनागनिनिजकरकवाये श्रीनंदलाला



तिलचावरीपकवांतम ॥ अथ तेलवर्तन ॥ रागगौरी ॥ तेलच
 ढावें मिलिदृजतारी ॥ हेमजटितमनिचौकीतापरवैवेहें लालविहारी ॥
 सालसुरंगतानिद्वलहपरविविजुवतीकरलीये ॥ ताकेमध्यपकवांनवि
 विधिधरिअरगधरगछविकीये ॥ सुंदरचारसखीसाहेधरितिनकरवां
 धीडोरी ॥ हरदहाथकरितेलचलवेंद्ववहरदमधिघोरी ॥ तिनयुवति
 निकीओलितिमैपकवांनवानकौदीनों ॥ उवटनकरिद्वलहप्यारे
 कैसवसधियनिघुनलीनों ॥ गावतहरिधितपरममुदितमननवतरु
 नीदृजवाला ॥ मायमुदितवडनागनिनिजकरकवाये श्रीनंदलाला

॥कंकरी गाव ॥२॥

धीके प्रनुव्याहनचलिहें गोपमुनिमननरदी ॥२५॥ रागविलावल ॥ कां
नकुंवरकजैयाकैंकरदेधिरिआजफवीछविनारी ॥ रतनजटितमनि
मोतिनिजगमगिदिजवरपद्विधाधतहितकारी ॥ हरदचटावैहरदहि
गांवेंउवटनधांवेंसववृजनारा ॥ कृष्णदाशगिरधरनछवीलेरंगरंगी



लेकावलिहारी ॥२६॥ इतिकंकन ॥ ॥अथज्यौंनारवर्ननं॥ रागसारंग ॥
श्रीवृजराजसदनजोजनकौंगोपसिमटिसवआएजू ॥ व्याहसमैंज्यौंना
रललाकीतिहिहितन्यौंतिबुलाएजू ॥ वनेहैंविमालचौककंचनकेम
निमयरचिततिवारीजू ॥ वैविगएचक्रंओरश्रुनगस्वरगांवेंसववृजनारी
जू ॥ कंचनशारकटोरामणिमयजारीसलिलनराईजू ॥ जगमगजगम
गहोतसवनिदिगादिनमालिकिरणिदुराईजू ॥ पुरुसनलगेशुरोहितहि
तसौंउपमांतांहिनपाईजू ॥ तिनकरकमलयरागश्रवतजैमैंहियग
तिमधुपजनाईजू ॥ अथमजलेवीकैंनीषजिलावृंदीशेवचलाईजू ॥
मांवीमवरीमगदकचौरीपूरीपूयसुहायेजू ॥ लुचईमोहननोगाईंदर
मेगूंगाअधिकसुधारेजू ॥ नीवूआवकरौंदाकटहरटेटीअचारसुठ
रेजू ॥ धेवरवावरवरादह्योअतिखोहाखिरसान्पारेजू ॥ वटहरकार
नटाअसआवरअदरषआदिअपाराजू ॥ नोजनकरतजातसववृ

जजनरसनां स्वादवडाईजू ॥ वैवेसनमुखस्यामसवनिकैलौचनरहेलुन
ईजू ॥ करकंगनां असुपाइयितंवरअसुनवनातविछाईजू ॥ पानस
तसंगमित्रमंडलीदशननिदमकधुहाईजू ॥ वोलिउवेउपनंदनं
दतवसरवेगेगमगायोजू ॥ ओठपहितखीरअसुदधिदुतबूर
तापरनायोजू ॥ तरकारीनाजीवजावेजनवेसनविविधिप्रकाराजू
पितौरयकौरीकढीराइतौषटरमअमितअपाराजू ॥ अचवनकरि



मुखधोइउवेसवदिषेपानसुखदानाजू ॥ छ्वाइनोंनअवतेलचढे
हंसवसुखसरनिधानाजू ॥ २१ ॥ इतिज्यांनार ॥ अष्टमंगल ॥ रा
गसारंग ॥ आजवधावोवृजपुरमैधरघरगावैरीमिलिमंगलचा
र ॥ चंदनआगनलियावोसरवीरीचोकपुरावोमोतिनहार ॥ क
लससुधापिगनेरापुजाक्षोकरोआरतौकंचनधार ॥ साधो
लगनमहूरतनीकेआरनखितरधुनितिथिवार ॥ श्रीकृष्णना

॥ अथ नाव घर घर मंगल चार ॥ २२ ॥

न के धाम कुलाहल को है व्याह विनोद अपार ॥ जगन्नाथ कविर
धातुलहनि हलह नंद कुमार ॥ २३ ॥ राग विलावल ॥ वृज में वृज



वासिनु कै घर घर वाजत मंगल मोद वधाई ॥ आयौ व्याह गुपाल
लाल को नौ वति धुनि धरनी न न छाई ॥ कलश गने श सुदेश सु
जायौ धिज वर लगन अनूप सुधाई ॥ सरस नेह सरोवर महिया
फूले कमल दहिये सरसाई ॥ २४ ॥ राग गौरी ॥ वाजैं वाजैं मंदल
वाजैं सुहेल रावाजैं ॥ नंद घर निआ मोद वधावे श्री वृष नान स
जन सौं काजैं ॥ वृज वासी बंदि सते आयि नर नारि नि कौन यो
समाजैं ॥ व्याह न चंदे किशोर किशोरी कौं जगन्नाथ के प्रनु आज

दृजराजें ॥ ३० ॥ राकां नरो ॥ फूलनिको सेहरो फूलनिकी माला ॥ फूल
 निको चोलना पहरें नंदलाला ॥ फूलनिको पटका फूलनिको दुपटा
 फूलनि इजार फूल फूलनिको नारा ॥ फूलमालनि गूदिलाई फूलनि
 सब सौं जछाई फूली दृजवाला ॥ फूली सरवी सब को तिगा आई फूले
 नंददा से देत बधाई गोप संग सजि चले व्याहन गुपाला ॥ ३१ ॥ राग कं
 नरो ॥ वरन वरन पऊ पकलिया गुदिलाई मालनि डलिया ॥ सेहरो
 सिरमौर साजें नंदलाला ॥ सोना अपरम पारमो ह्यो सब संसार राधे
 डलहनि हलहदीन को दयाला ॥ वाजत निसान घोर सुरनर मुनि सं
 घट जोरिन वसत साजें मंगल गावत दृजवाला ॥ माधो जन देखत
 ही आनंद नयौ रोमरो मजित तित छा इर ह्योरंगर साला ॥ ३२ ॥ दो
 हा ॥ व्याह विलास प्रकासत रु फूलिर ह्यो नंद गांव ॥ वर सानै छवि
 देषि फल श्री राधा जा को नांव ॥ ३३ ॥ अथ राधा मुहाग वरन नं ॥
 राग सहो ॥ मुहागराधाजू को गाइये ता को सांवल पिय मुख दाइये
 नंद गांव सुवा सब ताइये वा की छंचल जमुधामाइये ॥ ब्रषना नव
 वा की लाडिली माथ की रतिकी सुख साधिली श्री दाम सहो दरजा
 नियो ॥ ता को बहनि कांन की आनियो ॥ मुहागराधा तन सोहनौ ॥
 कांन को रातन सोहनौ ॥ मुहागराधाजू की छोटिया ॥ या की मास
 ननद सब खोटिया ॥ मुहागराधा तन मै दिये ॥ सो तो कछ था की छ
 वि मै छिये ॥ मुहाग अटल जुग जुगल से ॥ सो कछा व्रतिके नर वसे
 ॥ ३४ ॥ अथ तेल वरन नं ॥ राग सहो ॥ वर सानै छषनांन कुंवरि
 कै तेल चटावें गोरी ॥ तव तसनी असु वै संधि वाला रूप अनूप
 मनोरी ॥ सात्तानि वितान वनायो कर गहि कुंवरि कि सोरी ॥ ता
 कै मधिय कवान विविधि धरि कर कं कन विविदोरी ॥ मत्त मुहा
 गानि तेल चटावें गांवें मुहागिनि जोरी ॥ राधाजू तव उवटि कवाइ
 छविकी चठंज कोरी ॥ नृषन पट पहराइ कुंवरि को मरवट करि मु

॥ अथ नावराधिका कैतेल चटावे ॥ २३ ॥

खरोरी ॥ स्यामा करप कवांन दिवायो सव कौंनरि नरि जोरी ॥ ललिता
आइ आरतौ कीनौं छविन वढी कछु थोरी ॥ अर्धवटाइ लइ धर नीत
रसखि डारत तृण तोरी ॥ इहिं विधि व्याह विलास लडा कंछिन छिन गं
कगत गोरी ॥ परम गंम मंग कृष्णावति करै टहल मढल में दौरी ॥ ३४ ॥



गगविलावल ॥ अलकलडी कैतेल चटावें गां वैं मिलि ब्रज नारी हो ॥
सुनत हिं सिमटि सवै जुरि आइ ललितां दिकहित कारी हो ॥ चौक
में चौक धूरि मोतिनि कौ चौकी परवै ठारी हो ॥ तेलन के त्यों नारवि वि
धिकरि उवटि कवाइ सिगारी हो ॥ सातू सुरंग वितान वना यौगहिर
ही रूप उजारी हो ॥ स्यामा करप कवांन दिवायो मोदक मोद सुहारी हो
मुषमरवट के शरिकी राजनी श्री वृषजान डुलारी हो ॥ कृष्णदास
गिरधर नछु घीले की जाननि हं तै प्यारी हो ॥ ३५ ॥ अथ उवट नौं वने
ने ॥ राग सहो ॥ उवट नों मलिये दलिये मलि रुछु डाइये ॥ पुरहि तो
दुरजन लोगति नहिं नहिं नाइये ॥ हाटरियां सखि वै वि कै सो दाली
जिये ॥ तेल कुलेल मिलाइ मिलवनी की जिये ॥ आबो सषी सहेल
तेल चटाइये ॥ सोनें के चरवापां नी कंवरि कवाइये ॥ वरन वरन आ
नूपन मोतिन जालरी ॥ पहरि दछिन कौ चौर चौक कौ लावरी ॥ धरी

मङ्गरनसोधि सुलगन लिखावरी ॥ सधियन कै मुख पान सुकंगन वं-
 धावरी ॥ नैननिक जरादी नौ सिंदूर नरि मांगही ॥ चंदन कटोरा गाढै ॥
 लेप कियौ आंगही ॥ इक चंदाइ चंदन अंग सुंदर सकल त्रिनुवन-
 मनहस्यौ ॥ कुकिरही वैनी अनिक टिपर निरधिकै अहि पति डस्यो ॥
 कनक तरोनी कान आड अतिराजही ॥ श्रीशफूल की कांकिर निअ-
 तिलाजही ॥ तेरे करनिक कन वरा सिद्धें गै मोतिन को छरौ ॥ गलम-
 ध चौकी यों विराजत रवि मनो गिर मै डुरौ ॥ अंगियां रंग सुरंग सारी
 अति मोहई ॥ लहगा अति छवि देत सकल त्रिय मोहई ॥ मोह्यो म-
 कल जग परम को मल मुकर कां आनाहरी ॥ तेरे चपल नैन कटाह
 सुंदरि मृग ज चूले हो करी ॥ यगन पुरजत कार ललक नई हू नियो
 आए कल उजियार चंद जस पूनियो ॥ इक चंद पून्यो दुनि हिंदू नौ-
 अलप वै मक्रमारियो ॥ तेरे गान की कहा जात वरनौ कनक सांचे दा-
 रियो ॥ कनक चंनन गलागे मन अंसांचे दारिया ॥ अति गुन रूप-
 निधान सुव्याहन आइया ॥ धन्य धन्य नाग मुहागरा धे कृष्ण सो
 वर पाईया ॥ चिर जीवो यह जोरी सुजुग जुग माधौ मंगल गाईया ॥
 ॥ रदा राग राय सो ॥ श्री हंदा वत महदी राचनी ॥ सौरन सरस सुगंध ॥
 महमहायमंजरी मारी नमत नवर मद अंधा ॥ गौरा अवर गुलाव-
 सां मृग मद कंचन घोरी ॥ कनक कटोर निमशि धरी रही रंग अति
 धारी ॥ दोहा ॥ सात सहेली नेहली महदी नहदी रीत ॥ कर पद को-
 मल चित्र कै गांवे महदी गीत ॥ १ ॥ महदी रंग रंगलरी की जै महदी
 चारु ॥ जै श्री दामोदर मुहित गावे मोहन चारु ॥ २ ॥ ३ ॥ राग गौ-
 री ॥ महदी अलकल डीकै रचि हाथ निया न लगावै ॥ पलिका
 परलली कमल कली सी अलित वरी धरि धावै ॥ कनक थार न-
 रि धोरि धरी हेरष नान अजर छवि पावै ॥ देत सबनिको सार दर-
 नी वारि देष मवटावै ॥ अपन अपन पानि न चित्रति छवि सौ मी-

डिछु डौवैं ॥ कनकलता सी कोरु कोरु लडकति कोरति कौंदर सां वै ॥
जगमग जगमग होत दसौं दिमि को किल सी मिलि गां वै ॥ मोहिलिये
मन रूप माधुरी देह दशा विसरौ वै ॥ ३५ ॥ राग विलावल ॥ महदी कीर
तिमा इधरी तरि शारही ॥ वैरी तयत विछाइ राधा स कुंमारि ही ॥ ऊं-
मि ऊं मि नृज नारि आइ रंग आ जुही ॥ ललिता आदि कुंवारि सरवा-
सुष सा जुही ॥ गां वै व्याह सुहाग हिंये अ नुराग ही ॥ मनु को किल कु-
ह के वाग सु अ नुराग ही ॥ प्रिया चरन मै चित्र विचित्र सु महदी-



लावही ॥ कृति कर कमल सु जान विनां न वतां वही ॥ वर सां नैं छवि-
नीर छल कहिय आं वही ॥ नर हरिया घन स्याम वासत हां पां वही ॥
३६ ॥ कं कन जगमग प्यारी कै कर कसि कसि बांधत गोप कुमारी ॥ य-
पर पत्राकार सषीरी पीरी डोरि फवी छवि नारी ॥ हर दच दै अस नान-
क रां वै नख सिख कुंवरि अनूप सिंगारी ॥ कलावति फूली ललिता-
दिक आरति वारिल इवलिहारी ॥ ३७ ॥ अथ वानव ननं ॥ राग गौ-
री ॥ अरी वर सां नैं मैं घर घर वान त्यों ती फिरे लाडिली ॥ अरी जे वै-
राधा राज कुंमारि गां वै वधु तांति नली ॥ ललिता विसाया सहचरी-

सगसहितसवपरिवार॥ नोजनकरै महिभानके घर नोवतिवाजे
 द्वार॥ गावतगावतलां वैंगारी नोरी रूप आधार॥ मधिलटकत आवे-
 ल डैंती कोमलकंचन डार॥ आरतौ करि माइ कीरति राई नौ नउता-
 रि॥ द्विष्टिलगौ जिन डरपि जिय मै वंजुरि पि वैंजलवारि॥ न्यौं तीललि-
 तामाइ कै घर पाइ अति आनंद॥ गाइवजाइ लडाइ ल्यो वैंज्यौ उडगन
 मै चंद॥ आई विहसि विसाषा न्यौं तन सुनिरी कीरति माइ॥ वह निरा-
 धा संग चलिरी आनंद उरन समाइ॥ नोजन करि वंजनां तिकेतहां
 कहत नाहिन पार॥ वाजे सकल वजाइ लां वैंजत नजन नजन कार
 चं पकलता की माइ कहै बलिकीरति मेरै धाम॥ सहित परिकर करहु
 नोजन राधा अति अनिराम॥ चौकमाणि मय नान वैवे नवन वधू अ-
 पार॥ जारी सलिल सुगंध सो नित राजत कंचन शार॥ वाजे जलवी फौ



नीलदू अवर वंजत अवार॥ पाछै आदन पहिति दधि घृत पटर मअ

मितअपार॥ जैवैकुवरिदृषनांतकीकंगनपियरीडोरि॥ काकीनाजीव
 हनिफूफीआनदसिंधुजकोर॥ धोइमुखपुनिघाइवीराहीरादशनरस
 ल॥ अधरविंवविसाललोचनमोहिरहीदृजवाल॥ दोलजेरिकरना
 लिजालरिवजतअतिजनकार॥ गावतगावतलैचलीसवआइरा
 जडुवार॥ आरतौकरिलईनीतरगावैंगीतरसाल॥ रांणीकीजाईकुं
 वरिमेरीजसुमतिकोगोपाल॥ घरघरयाहीनातिनगरमेंआनंदहो
 तअपार॥ परसरामअनिरामसजनीकछावतिवलिहार॥ दोहा॥
 कीरतिकुंवरिविसालनिधिछिनछिनछविसरसाइ॥ अवनंदगाव
 छविदेखियेआनदउरनसमाइ॥ ४३॥ रागसरहा॥ दृजदूलहकीसु
 घरसुघोरी॥ विधुनांमानोंसांचेदोरी॥ याकौललितवदनअतिसोहे
 सुनकपोलचिवुकचितयोहै॥ याकेचंचललोचनतारे॥ मानोंचैनग
 दीयउजारे॥ याकेकाननिकीछविअैसी॥ कामकतरनीचंचलजै
 सी॥ याकेदंतदियतअतिहीरा॥ जीनललितमनुषायहैंवीरा॥ या
 केअसनअधरअतिदीसै॥ फूलऊरैतवहनहनहोसै॥ छंद॥ ऊरै
 फूलसुदेशहीमनिदृगनिअतिसचुपाइये॥ नंदनंदनघाणप
 तिकीसुघरघोरीगाइये॥ याकेकेशवारसरससुदारमणिमखल
 लमोतिनसांगुही॥ मनरिजावनमनकुंसावनमासमैफूलीजुही॥
 याठिकौजिनदीठिलागोमिलिरहीमोटीपुठी॥ कलमलैप्रतिविंव
 तापरमनकुंमैतघटाउठी॥ याकीपूछचवरछविवादी॥ मानोंमनम
 यसाचैनरिकादी॥ याकेकंचननालवनाए॥ चरनसरनचंचदाचलि
 आए॥ याकेचास्योपुनरअतिजलकै॥ दृगनिरषतलगतनपलकै
 याकीछेलछवीलीछाती॥ मखमलकीपसमसुहाती॥ याकौन
 खसिखरूपसुहायो॥ मषमलयौउरतांनिवनायो॥ छंद॥ मख
 मलयौउरतांनिर्जरतनजटितलांगमज॥ यहजीनपरमव
 बीनजगमगमनकुंमूरतिकांमज॥ असवारनंदकिशोरताय

रनिरधिमनसवकौहरै ॥ हरधिराईलौ नवारति आरतौ जसुमति-
करै ॥ धंत्ययहमुषस्यामघनप्रचुद्रिगनिअतिसचुपाइये ॥ नंदनं
दनघाणपतिकी सुघरघोरी गाइये ॥ धराराग रायसौ ॥ स्यामसुंद-
रतेरीघोरियां ॥ तिहिंचटिब्याहनचलियां ॥ आजसफलसवहो-
हिंगावरसोनेकीगलियां ॥ चंचलचपलतुरंगिनीचलेचालसुहा-
ई ॥ चित्रविचित्रलेखनिलिखीकछुछविवरनीनजाई ॥ दुमची-



जीनजराइकेफोंदामुनगमुहाये ॥ गगवागमझरावनोंनगतिर-
मोललगाये ॥ सोहंछत्रकलाइचेमुखअतिमृदुमुसिकाई ॥ चौं-
रविजनछविमोंदुरैअसपटपीतसुहाई ॥ रतनजटितसिरसेहरोमे-
तिनलरन्यारी ॥ श्रीतिदुराईक्योंदुरैआधिनिमैप्यारी ॥ कुंडलमुक-
टजराइकेगलमोतिनिमाला ॥ यझंचीपदिकवनाइकीवलिग-
इनेनविशाला ॥ नंदववाकौलाडिलोरसत्तरकुंवरककाइरी-
राईनौनउतारईवलिगईजसुमतिमाई ॥ मंगलगोंबैंगोपियां-
मिलिसंगसहेली ॥ वारैरंगअंगूठियांछविनरीकंचनवेली ॥ व-

हछिनकैसी होयगी जब मिलै कुंवर कि शोरी ॥ जगन्नाथ अवि
 चलरहो श्री राधा पति जोरी ॥ ४४ ॥ राग दीपक ॥ धुनि गौरी ॥ घोरी
 वग कन बेलियां गढ मुलतान ते आई ॥ मोहन मेरे लाडिले की घो
 रियां ॥ तो कारन मेरे लाडिले तेरे वाय सुलाई ॥ मोहन मेरे ॥ चारि
 घुरी कंचन जरी मह दल राचे हैं केरा ॥ जीन जरी नलगो महै चांम
 वरी जल पोस ॥ घोरी व आपसि गारि कै अतिल डन ये असवार ॥
 पायल लाकै मोचरी पीडरियां कंचनार ॥ हाथ चकर गढ मूंद राय
 ऊंची टोडर पाणि ॥ मोतिन की माला हियें रतन ऊं डल दै कांन ॥
 कंध जने उपाट को सांवल अंग दियाइ ॥ गरखंग वारौ दोलनां
 जगमगत कवाइ ॥ ऊनें लाल के कापेर नन साल ते आई ॥ मां
 थैं चंदन कोरि है मुख नरियां न चवाय ॥ नौ हव दरिया ऊं न ही
 नैन कजल कारेख ॥ अंग अंग रूप ऊरी लगी मुसकनि मधुर
 विशेख ॥ बोटीय महमद पाट की और शिर मोर दियाइ ॥ इत
 नां यहरि मेरे लाडिले ज्यों जन लोग सिहाइ ॥ कौन सुयो तो व्या
 हिये कौन सुस गौ दुहेत ॥ कौन सुको कल दीवला कौन सुस
 गौ ननेज ॥ परजन्म सुयो तो व्याहिये ना नल सगौ दुहीत ॥ नंद
 महर कल दीवला ज सुधर सगौ ननेज ॥ व्याहिव हलै आईयो
 अवगढे सिंघ दुवार ॥ अव करि वहन लिआर तो राई नौ न
 उतार ॥ राई मह गीरे वरै नौ न सनरि कै देस ॥ वहनि बुलाई आ
 यनी आरति करि मुख पाइ ॥ वहन लिम हंगी आरतै जेर वसै
 परदेस ॥ अव करि जसुमति मनरली वारौ कांन विवाहि ॥ व
 हउतारी गो यरै सो नो धरि नंडार ॥ दंपति सरसनेह मुख निव
 होनि न विहार ॥ ४५ ॥ इति घोरी वर्नन संपूर्ण ॥ अथ सहरो वन
 न ॥ राग विलावल ॥ सुंदर सेहरो वन्यो लाल शेरौ वन्यो
 हरो हरि हलह कै कुसुम तांति तांति ॥ जिनि देव तल घुलागत

मनिमोतिनकीक्रांति॥ अवननिहरिहलहकैवनेंकरनफूल॥ रविछ
विकीजगमगानिहोतनसमतल॥ कुंऊमकोटीकौपछिरचौलला
टपाट॥ मानकुंयहदीमतिहैमनसिजकीवाट॥ मुकतासुकनासा
कौसवकौचितचोर॥ हसतलसतदशनजोतिअधररंगतमोर॥ दु-
लरीगजमोतिनकीमध्यमानिकदिमक॥ मनुनछत्रपंकतिमैमंग-
लकीचमक॥ वरनवरनफूलनकीमालामनमोहै॥ रतिपतिकेजूलन
कौंजूलौजनुसोहै॥ नुजनुजंगअंगदछविउपमानलहो॥ पऊंछिनिरु
चिपऊंछिनकीरीजिहीरह्यो॥ कटिपटपरकिंकिनीरननऊननराव॥
लजितकलहंसमुखरनूपरमुनाव॥ हलहटजराजकुंवरदुलहनि
तानुदुलारी॥ निरधिनैनगदाधरयहसंपतिहैहमारी॥ ४६॥ रागरा-
यसो॥ ललितलालकौसेहरोजगमगिरह्योहैरीमाई॥ हरषिहरषि
गोपीगावहीयहमुखदेखोआई॥ अलकैंजलकैंवदनपरमखट
खोरिवनाई॥ सोनासीवउलंधिंकैंउमगीहैसुंदरताई॥ कुंऊमवैंदी
नालपरससिसमउदितसुहाई॥ मुकताअछितनजलदमैउडगन
दतदिघाई॥ नृकुटीकटिलमनमोहनीहैमुखदाई॥ बागोवीराअ-
निवन्धौछविमोचनुराईछाई॥ जननीनौछावरिकरैवाजेवजतबध
ई॥ मुखनिताजकिथकिरहीरसमूरतिहैपाई॥ धनिजसुमतिमु-
तसांवरोहलहकुंवरकजाई॥ राजकुंवारीराधिकानवलदुलहनी
पाई॥ यहजसगावैमारदाजिनकेनागवडाई॥ यहआनंदजिनके
हियंसरदासवलजाई॥ ४७॥ रागविलावल॥ चंदनचौकीपरमन
रंजनमंजनकरिवैठेनंदलाला॥ आईसिमटिसकलदृजसुंदरिगां
वैकोकिलसीकलकंवरसाला॥ पीरपटकीलयटिधोवतीमनुध-
नतडितलतातिहिकाला॥ मुखमरवटिकेशरिकीकीनीअंज-
ननुतवनेनैनविमाला॥ मालतानिवितानवनायोगहिरहीच
हैआरनववाला॥ हलहकरपकवांनदिवायोसवकौनरिनरिगो

दरसाला ॥ आइसवासनिआरतिवारतिनैननिहारनिमनकौजाला ॥
फिरिछवि सौंपलिकापरवैवे कृष्णवतिलविनई है निहाला ॥ ४७ ॥ पुनः
रागविलावल ॥ नटकीलीचोटीगुही है सवासिनिमटकीलीछविकहि
यनजाई ॥ लटकीकटिकै निकटसखीरीअटकीनटवरकैमननाई ॥
कंचनऊवामघतलनस्योरीमनिमोनिनकीजगमगताई ॥ उलहीरूप
लतासीतामिति किधौदांमिनिदेखनकौंधाई ॥ नखसिखअंगसिंगा
रनयौतवमालनिमौरमनौहरलाई ॥ लेजसुमनिसुतकैसिरवांध्यो



कृष्णवतिछविपरवलिजाई ॥ ४८ ॥ पुनः विलावल ॥ अवमालनि
गुहिलाई फूलनहारा ॥ नखसिखरूपअनूपसखीरीतैसेईयगनूपरऊ
नकारा ॥ दिनहूलहकौलैयहराथेलुवधेनवरकतगुंजारा ॥ नखन
पटसुयहरिजगमगीमेवामहरिदयोनरिथारा ॥ घोरीगावनधुम-
डिरहोधनगर्जतनननीसांनअपारा ॥ सरसुजांनसवैवृजवासी
सुषरासीतहानंदकुमारा ॥ ४९ ॥ पुनः विलावल ॥ गंधनिअतरतुरत
लैआई ॥ नखसिखचरचिस्यामसुंदरकैछवि सौंमुरिमुरिलेतव
लाई ॥ जगमगजगमगनंदकैआंगनकौरहिनीरवधुनिकीमाई ॥

नवलकि सौरी घोरी गाँवें जनु उयवन को किलधुनिलाई ॥ वारो-
 किरनि चंद्रमां सौकी चौकी बैठे हैं कुंवर कजाई ॥ मोहिलियौ मनरु-
 यमाधुरी फूली फिरत जसोमनि भाई ॥ ५१ ॥ गोरी तमोलनि आगें आ-
 व ॥ लोंग कपूर सुगंध निवीरी रतन डवानरि कै तूलाव ॥ सूर्य छकीर
 चिपांन यवावति हियमें होत दोगुनौं चाव ॥ रंगिरहे अधर मधुर दवा
 नावलि वारों तडित लता परि नाव ॥ कुकिर स्यौ मोर सेह रौ जगमगरग
 मगनै ननि ही को दाव ॥ वाजि उवेनी सान विविधिरंग मनु घन गर्जित
 सहज सुताव ॥ घोरी चढे नंद लाल सखीरी छवि सौं दिये पाय रें पाव ॥ मु-
 दित गदाधर सव वृजवासी मुदित है वर सानें को राव ॥ ५२ ॥ रागविठ
 रहसि मनमालिनी आई सुंदर सेह रौ गुहिलाई ॥ सुघर रचि सरस वना
 यो सो हरि हूलह के मन जायो ॥ सुघर सरस वनाय सवा स्यो हूलह की
 रुचि सौं रच्यो ॥ हीरालाल गोती सरस मांनिक जुरे सम सव सौं षच्यो ॥
 गुहिराई बेल चंपाचमेली फूल लर विच विच गुही ॥ जोति जगमग होत
 निरयत नगन की छवि चह चुही ॥ गोपी जनमंगल गाँवें ॥ इक करर-
 चिरचिम हदी लावें ॥ इक लै सौं धोनु पटि कवाई ॥ निरखि कुंवर छवि-
 अति सुख पाई ॥ कुंवर छविल रिवे निरखि सेना मरी नख शिखलौं
 चढी ॥ लजित कामस मूह को टिक मनौ मूरति विधि गढी ॥ वसन यहरनि
 नवल हूलह स्वस्ति वाचन द्विज पढी ॥ वागो वन्यो अति कुंवर को ति-
 जं लोक मंगल धनि वढी ॥ मोहै मिरयाग सु रंग रंग हरें ॥ तन जर दोजी
 कंचन यहरें ॥ वनी सूर्य निपटु काजर तारी ॥ मानौ छवि पुंज वढी इ-
 कदारी ॥ छवि पुंज सो है अंग हरि कै पीत वसन तन फरहरें ॥ ऊलक कुं-
 डलगंड मंडित असन तानै नन नरें ॥ चपलती तन नै ननि अंजन-
 कमल दल क्यो सरिकरें ॥ ते सई सुंदर नासिका पर चपलता मुकता-
 रुरें ॥ मोर सुकट छवि अधिक विराजै ॥ रतन ये चयर चंद्रिका राजै ॥ मरु-
 वट के सर को मन मोहै ॥ जनु विधमंडल में अति सोहै ॥ अति सोहै सु-

वसरसविधुतैपरमसोनावकुसनी॥ अलकरमनीजलककमनीकं
 वडुलरीअतिवनी॥ वैनीगुंहीलैकुसुमकालियनिनालमोतिनकी
 लरी॥ चौकीविराजतदमकनरमैमुखचंदकीआगेस्वरी॥ हरिकरकं
 कनकंगनासोहै॥ अगुरिनिमुदरिनीकीछविमोहै॥ नुजअंगदफौंद
 निमौराजै॥ सरसअरुननखकिरनिविराजै॥ नखकिरणिअरुणता
 जगमगेमुखकमलनखिवीरीरची॥ तिऊंलोककीछविलजितनिरख
 तकौनपटतरकौवची॥ उरमालसोनापरमलेनारहिनिरषिकामि-
 निथकितही॥ कोउसांवरीछविहियेदुरतिकोऊजाइहरिहियेमेंरही
 करकमलियेवीरीमुखदिये॥ नंदजूवांधतसेहरोहरषितहिये॥ आर
 तौजअष्टमिद्विकरोवे॥ कोटिकिरनिरविनिरषिलजावे॥ रविको
 टिकिरनिप्रकासपूरकनंदसदनअतिजगमगे॥ नहिलोकसेसमहे
 अयटतरदेवनगरकीकौलगे॥ मुदतिजसुमतिकारिनौछावरिजाच
 कजनवकुयांवही॥ विविधिरंगितवसननूषनमालनीपहरांवहीः॥
 विविधिसुमनरचितुरीरचाई॥ तिहिचटिसोहतऊवरकनाई॥ डुंडु
 निधुनिअतिघोरमुहाई॥ मुघरसुनरसहनाइवजाई॥ सरससुरसह
 नाइवाजेऊजिनेरीकोगनै॥ कोलाहलतिऊंलोकपूस्यौवानकोका
 कीसुनै॥ देषनकौसुरखौमछाधौऊसमावलिवरखांवही॥ देवनारी
 किंलरीमिलिरहासघोरीगांवही॥ गोपवैनैमिरपगियागती॥ कोटिमू
 रतिमतौमदनवराती॥ मणिनूषनपहरैइकवांनै॥ सजिकैवरातच
 लवरसांनै॥ सजिवरातवनिऊंवरचक्रीनिरषिनैनसिरातहै॥ मधि
 नंदसुतजुवराजतनैतसुनताजुबुधानहै॥ तुरियचंचलचलतरबु-
 रियनफरहराअतिफरहरै॥ मुनिघोरसोरहिंनिरसदुर्जनदेखिधीर
 जनांधरै॥ देषनकौवकुतामितिआई॥ चटिचटिअटनिऊरौषनिछा
 ई॥ ललितऊंवरलषिनैनसिरावै॥ रीकतमनमनकंठलगावै॥ रहीरा-
 जिकबुमुधिनहीतनमनश्रीकृष्णछविगगिलई॥ दृजजीवनघनहै

रसवतनतमुरिमृदुमुसकनिदर्श॥ इककहैसखिनिरखियेयातननवलजो
 वनलहलहैं॥ चितवौंपसौंचुनिजातचितवतिकोनधीरजकौंधरै॥ धनिडु
 लहनिश्रीदृषतांतकुवारी॥ वरपायोनिजकुंजविहारी॥ सोस्मृतिवेदपुरा
 नवरवांती॥ तरुनिमुकटमनिगधिकारांती॥ जुववनीजोरीअनुरागराग-
 की॥ जेगांवैसेहरौललितवरकौकहाकहोंवउन्नागकी॥ जोरिकरवालि-
 करौंविनतीनागरीनवलालकी॥ नौछावरियहदामियांवैशरणलाल
 गोपालकी॥ ५३॥ **रगविलावल**॥ हरेहरेवासनकीडलियामालनिगुहि
 लाईमौरवनाई॥ विविधितांतिफूलनिकेफौंदारेसमगुहिसधिसरसमु-
 हाई॥ कंचनमनिमयजटितटियारौडांडीउपरनगनिलगाइ॥ जगमग
 जगमगहोतदसौंदिसिरविससिदामिनिडुतिडुरिजाइ॥ लैजसुम-
 तिसुतकौंसिरवांधौनषमिषनूषनवसनसजाइ॥ औरमोतिनलरसे
 हरोसोहसोछविहियमैरहीसमाइ॥ अरवकुदिसिगांवैगोपीजननरि
 अंजुलियरूपनिवरषाइ॥ वहनिसवासिनिवारतिआरतिऊगरतमा
 गतनेगाअघाइ॥ रंगरंगमनिनूषनपाटवरमालनिकौंजसुमतिपह
 राइ॥ वृजसुंदरडुलहाघोरीचटिसजिवरातचलिगोपसुहाइ॥ सहना-
 ईकरनालिवजैंधुनिनौवतिधुनिधरनीनतछाइ॥ चौरदुरांवैछत्रफि
 रंगैरविरथकौंदियोगर्वहराइ॥ धीयावातीगैडैजसुमतिमोहनमोह
 नकौंकरवाइ॥ पानघातरंगेअधरदशनछविऔरवसनकेशरिछि
 रकाइ॥ हयगयरथसुषपालमनोहरगवालचलेमनमोदवढाइ॥ ज-
 गमगहजवासीसुपरासीकक्षावतिछविपरवलिजाइ॥ ५४॥ **रगसा**
रंग॥ चलिवरमानेजमडिवरात॥ प्रेमनरेहजवासीराजतअधुतरंग
 चुचात॥ गोपसत्तासागरमैफूलेंदराइवडचात॥ कीरतिगावतध-
 रकोजावकनिर्नकमनहरयात॥ हयहाथीवैरथसाजेंउपवन
 कदलीयात॥ घोषनिसानवजतसहदोनंधरनीरविथहरात॥ हल
 हवनैस्यामधनसुंदरछविवरनतसकुचात॥ लगिरहीजगमगजो-

तिमोरसिरसवकेमनअरऊत ॥ निगमनाटजाकौविरदवधानत-
आनदउरनसमात ॥ गिगनविमानपऊपवरखेंसुरजैजैधुनिसर
सात ॥ मंदमंदगतिधरतअवनियगदरसनकोउनअघात ॥ छुट

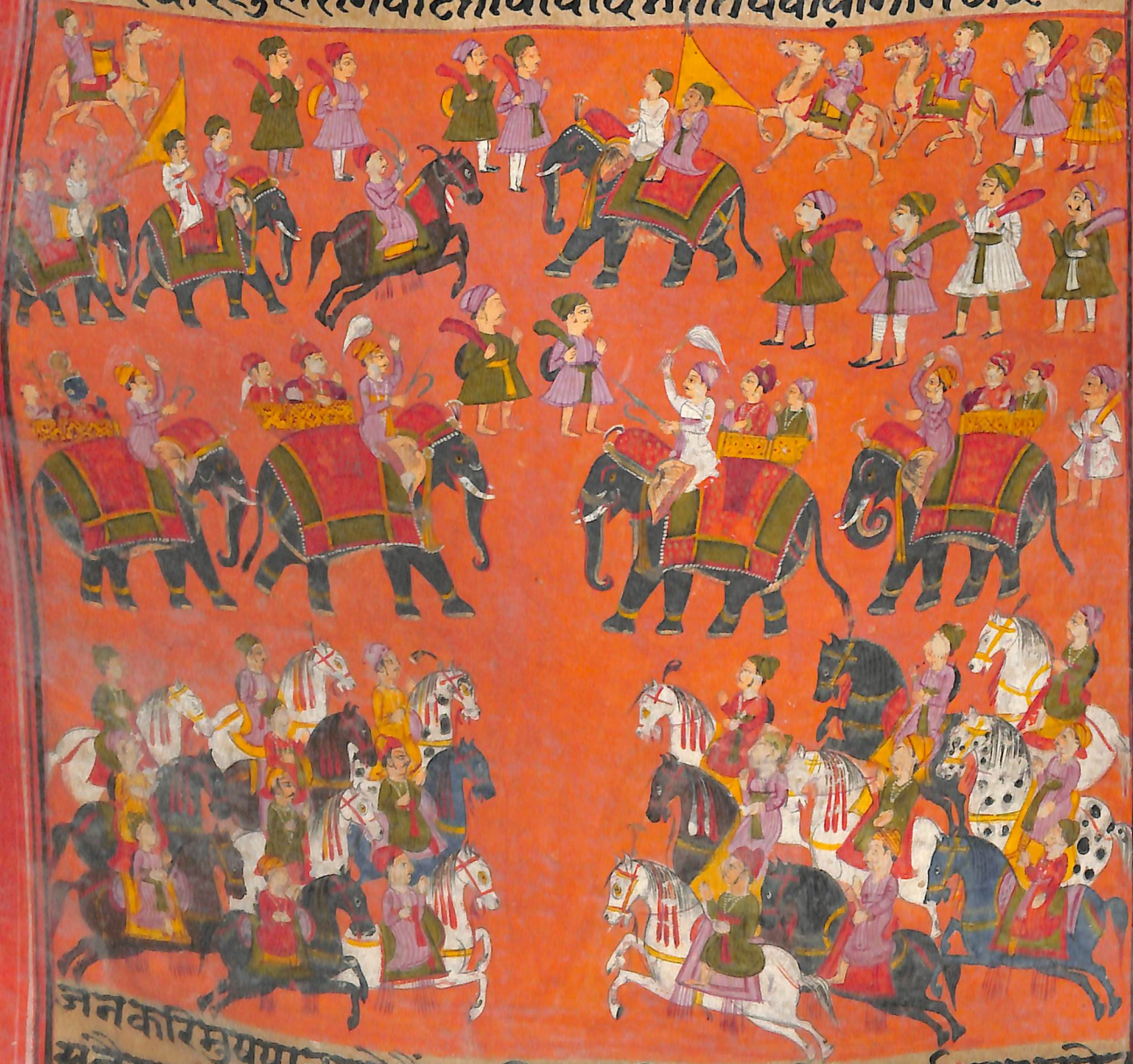


हवाईनिरतउडगनसोननजनोफूलउडात ॥ सोनाअनूपवनी
वरमानैउपमासबडुरिजात ॥ श्रीचजदलहकासोनानिरखतर
सिकदासवलजात ॥ ५५ ॥ राग ॥ छविनिकेतसंकोसमेंज
गमगवैरीआइवरातरीमाई ॥ दलहकैसंगमित्रमंडलीचितव

॥ अथ नाव वरमाने वरात आई ॥ १७ ॥

कृ० वि०
१६

तचित कौलेत चुगई ॥ फूलहार मालनिय हरये नमत्त नवर मुंजा-
र मुहार्ड ॥ आइत मोर निपान यवावति नितरी नेह्यरी ॥ अरु आई
केशर सौं पट छिर किरंगीले किधों केशर फूल निवारिल गाई ॥ न
रिनरि थार मुहार निवांटत विविधि जांति पकवां नमि गाई ॥ नो-



जनकारि मुपयानि तरहं हसनिलसनिरसरीति वडाई ॥ सरसनेह
सवैसरमाने बलिवरमाने छुवि छाई ॥ ५६ ॥ दाहा ॥ वरमाने केदे-
तमं असनवनात विछाई ॥ वैगी अनिवरात हानंद अनंद हि पाइ
॥ ५७ ॥ गोयमना माधिमंडलावसुदामा अनिराम ॥ सुवलसुवा ऊवि

॥ अथ ताव वरात कौल वाज मो ॥ १५ ॥

शालत हां श्री दामां वलिराम ॥ ५५ ॥ मुष मुल कनिचित दनि सुख
विम सुवटि मन र हो मोहि ॥ श्री वृज सुंदर छवि मोर की ल गो व लै यामो हि
५५ ॥ नख त पट रं ग रं ग के पी त व स न फ ह रा इ ॥ स्या म अंग घन मे भ नो दां मि
नि सी थ ह रा इ ॥ ६० ॥ पां न भा त रं ग अ ध र छ वि हि यै म र ही स मा इ ॥ इ ल ह



छवि कृष्णावती कही वधुनि मे जाइ ॥ ६१ ॥ अरी चलि हल ह
देख न जां हि ॥ सुंदर स्यां म स लौं नी भूर नि अ धियां नि र धि सि रां हि ॥ जुरि आ
ई वृज नारि न वली मोहन दि सि मु सि कां हि ॥ मोर व न्यो सि र कां न नि कुं ड ल
म सु व टि ल लि त सु हां हि ॥ प हरि ज र क सी व स न अ नू ष न अंग अंग म न उ

रजां हि ॥ तैमियवनी वरान्त च हंदिमि जगमगरंग चुचां हि ॥ गोपसनास
रवरमै फूलैकमलप्रमलजयटां हि ॥ नंददासगोपिनि केहि गअलि
तपटन कौं अकुलां हि ॥ ६२ ॥ राग ॥ वैरी वरान्त सिमटि वेंडै नरना
री देखन धाये ॥ वरसं नै वृषनां न नृपति सुनि आग्योनी सजिलाये ॥ नृ



षनवसनभुलेसवहिन के हरषिहरषिपहराये ॥ स्पाम सुदरसिगारक
यें लघिनै ननिहियें मिराये ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ कंबनमुक्तामालमनिही
रलालअपार ॥ असनवसनभुषनदियेता कौअंतनपार ॥ ६४ ॥ गोध
नमोधनवहुदियेअश्वरथनिकेसाज ॥ वृषनादिकरथआदिदेदाम

॥अथ नावतारणकोश्रीकन्याया॥२५॥

दाससभाज॥६५॥ वारौगीवरपौरिचैहलहराजतमदनगुयाल॥ कीरति
वारतिसनमुखगदीसवैहसैवृजवाल॥ निरधिनिरधिललितादिकफूल
परीप्रेमरसजाल॥ कलावतिवलिजाइछिनैछिनवाद्योरंगरसाल॥ दोह



पौरिवडीवृषभानकीवाटेमदनगुयाल॥ कीरतिवारैआरतौकरलियेकं
चनयाल॥६६॥ जुरिद्वजनारीगारीगावैंकोकिलकंठरसाल॥ डुंडुनिही
हदसौंदिसवाजैगाजैकंजरमाल॥ आनसवाजीकोवक्रवर्ननकरि

कृ० वि०

२८

कोसकैप्रकास ॥ नानानातिनातिकेरंगनिअंगनवीनविलास ॥ वि
नविचित्रविचित्रवनाइधरेतहांगनगंगुमहयहाथी ॥ मोरचकोर
नवरपिकसुंदरकुलजरन्वैचंपसाथी ॥ छुटतहवाईननकौपरसत
जलटिअवनिकौधावै ॥ अमरमनौंदेखनकौधावैअमरपुरीतजिअ
वै ॥ ६॥ ॥ ॥ जनवासेकौतवगएकौनौतोरणचार ॥ नोजनकौ



सबआइयेननकरननृतकार ॥ ६॥ ॥ ॥ पवरंगचित्रनिमंडफरा

२८

जतमनिमयसंतलगाये॥ वैवे आइसजन छवि सौं जलकारी हाथ डुहाये
 परसनलगे पुरोहित हित सौं षट् सधार सजाये॥ हलह कौं जन द्रा
 से नो जन वधु वनि आनि कराये॥ १७॥ दोह॥ दृष नान सदन अति
 जगमगे वैठी आइवरात॥ गारी गां वैना गरी को किल सुरहिल जात॥
 ११॥ १२॥ राग सारंग॥ श्री दृष नान सदन नो जन कौनं दादिक सब
 आहो॥ तिन के चरन धरन कौं पाटं वरजु विछाए हो॥ राम कृष्ण
 दोर्ज वीर विराजत गौर अपाम दो उंचं दाहो॥ तिन के रूप अनूय-
 विराजत मुनि जन मन के फंदाहो॥ चंदन घमि कुं कुं ममृग मद
 सौं नो जन नमिलि पाई हो॥ अति उजल कर्पूर नूर करि चरनं ।
 चोक पुराई हो॥ मंड पछायो कोमल कमल नि सीतल छाह-
 मुहाई हो॥ सुख सुगंध सुजात सुकोमल सब के चरन प्रछालि-
 हो॥ करि विनती कर जोरि सब नि सौं कन कपी ठवै वोर हो॥ रा-
 जतराज गोप नूयति संग विमल नेष आनीरा हो॥ मन कुं समा-
 जराज हंस नि कौ मांत सरोवर तीरा हो॥ धरे आनि कै फटिक कं
 टोरा अस कंचन कथारी हो॥ ढिग ढिग धरी सब नि कै सुंदर सी-
 तल जल नरि जारी हो॥ परसनलगे पुरोहित हित सौं जिन की
 विदित वडाई हो॥ जिन के दर सपर ससं नाषन जनु सुर सरि
 ता आई हो॥ गांवन लगी गीत गारि नि के सुक मारी वृजनारी
 हो॥ अति कुलास परिदास परस्पर यह सुष सो ना न्यारी हो
 आदन की उजलता मंनो सुध रूप धरि आई हो॥ पीत यही ति
 श्री तिज नु इत की प्रगटि आप जनाई हो॥ कंद मूल फल फू-
 ल यत्र मय विंजतर चेष कारा हो॥ मांनो ए प्रगटे न तल में अमृ-
 त के अवतारा हो॥ वरावरी अस विज विजौरा पा पर यात वना
 ये हो॥ आमल वेल अबनी वृफल अत्र कन ले संधाने हो॥ सद्य
 सिराहत सुरस्ती घृत कौं सौर न धान अघाने हो॥ पुनि सौं धी-

॥तुटि॥ ॥दोहा॥ जनबासे कौतव चले दुंदुनि दीहव जाय ॥
॥पंक्ति॥ पुनि विवाह कै कारनै साजि चले नदराय ॥१२॥ ॥उमी॥

कवि
१९

मिषरनि अस्यो हा अवर सरसनां तो ये हो ॥ आमल रस घटर स अति
तीक्ष्ण नौ न मिले रस पोखे हो ॥ वज्र तनांति पकवान वनाये को करि
सकै वषां नां हो ॥ ते परकार परे नहिं कवहुं सुरपति कैं कां नां हो ॥ व
ज्र तनांति विधि विंजन परसत परसन हारे हारे हो ॥ जद पिउ नै सारद
कीसी मति तदापेन जात स नारे हो ॥ करि आचमन उठे सब वृज जन
मन में अति मधु पाये हो ॥ पट नखन वीरी संधि सौं पूजि सजन पधरा
ये हो ॥ यह संपतिय ह सुषय ह सोना कापै जात वषां नी हो ॥ जूवनि
आनि उगाइ गदा धर नाग आपनो मानी हो ॥१३॥ रागधना सिरी ॥
मोहन दृषनांन कैं हो आए आलीरी नंद लाल ॥ इक गारि मुहाई हो ॥
कहुं सुनि चित्र कला ॥ तेरी वहनि नंदनी हो चंचल अति अवला ॥ श्री
दामा सौं मन मानी हो सो नित सो सवला ॥ तेरी फूफा निधि रूथी हो मे
हे नृप दला ॥ तुमरी माय मोहन जू हो चमकै जौ चयला ॥ आनद अ
लवेली हो गज गति चाल चलै ॥ बोलै नहि बोलै हो नो हनि मान करै
गुलगज कौल हगा वन्यो हो सारी सरसवनी ॥ दरियाई की अंगियां
हो समधनि अजववनी ॥ पुनि आई दृषनांन कैं हो अति सुषया
इरही ॥ जनहरी दास वलि जाइ हो सोना परन कही ॥१४॥ ॥अथ
श्री कृष्ण जू विवाह कौ आये हैं सो सैव नैन ॥ दोहा ॥ वंदौ श्री गुरु के
चरन देन महामति सार ॥ श्री राधा कृष्ण विवाह कौ वरनौ विविधि
प्रकार ॥ १ ॥ रतन जटित मंडफ वन्यो नहि सोना कौ छोर ॥ गज मो
तिन की जालरी जगमगात चहुं ओर ॥ २ ॥ तैसे इ सुंदर धन अति
मनिमय दीप प्रकास ॥ मृगमद आदि सुगंध की व्यापक सरस मुव
स ॥ ३ ॥ व्याहस में जुग चारि हं मंडफ रचत नरेस ॥ नयोन आगें हो
इगो अंसौ वन्यो सुवेस ॥ ४ ॥ रत्न स्वर्न मय कल सत हां गज मोति
न के चौक ॥ तैसे इ चोरी चित हरे वारों तहां सिसौ क ॥ ५ ॥ गर्गा
दिक वैठे तहां प्रोहित परम उदार ॥ मन ऊंचतु मुख आपु ही कर

तमं न उचार ॥ ६ ॥ आगत वद जजहं संग दूलह स्याम सुजा न ॥ व्याहस
मैं जै सैं कही तै सैं कियो सनमान ॥ ७ ॥ विमल विछौ न निपर विह
सि वै ठे सव परिवार ॥ आये आगत सोहत है सुंदर नंद कुंवार ॥ ८ ॥
लोचन नर नारी निकेल गे तहां कुल सात ॥ ज्यों चुंव कलहि लोह क
नल गे नइत उत जात ॥ ९ ॥ वेदगर्न आद सुलिये नृगुर पुरोहित सुख
वेदमंत्र लागे पढन दोउ परम सुबुद्ध ॥ १० ॥ आगत वद यज्ञां न जूजि
न को जस विष्णात ॥ लखि सो जानें द सुवन की आनंद उर न समात
॥ ११ ॥ कनक थार रोचन रुचिर अक्षत दर्व्य पवित्र ॥ कियो रोचन हेत
सौं श्री दृषनां न विचित्र ॥ १२ ॥ गावन गीत वधूसै वैदित नरि मंगल चा
र ॥ श्रवन सुनत मोहत तहां गगत के परिवार ॥ १३ ॥ स्वर्न रत्न मनि
जुक्त वर पटा सुगादी जुक्त ॥ वैगरेत हं हेत सौं पढि वेदमंत्र श्रुति उ
क्त ॥ १४ ॥ यद प्रछालि युत अर्घदै स्वर्न पात्र सुषयाइ ॥ तव अच वन
करवाइ कै मंथ कर्कध स्यौ तहं आइ ॥ १५ ॥ कर गहि अंग सुपर सपर
पटि कै मंत्र जु कोइ ॥ जानै गौय हने दसौ व्याहय द्यौ सो होइ ॥ १६ ॥
तीहां सैं दृषनां न जूव कुत दिये गोदान ॥ लिख्यो व्याहय प्रति स
मैं यह वरता सप्रमान ॥ १७ ॥ तव आई कन्या तहां श्री राधा रूप की
भी व ॥ कहा वर नौ हौं तुछ मति रमाउ मां अध श्री व ॥ १८ ॥ तव दोउ प्रो
थोउ चार ॥ १९ ॥ सिद्धि श्री सव गुन अलं कृत गो जाह्न न प्रतिपाल ॥
दित कर पाइ प्रताप नृवरा जत अरि कुल साल ॥ २० ॥ राका नि सि
ज कियो ब्रह्मंड ॥ २१ ॥ अग्नि गोत्र ज दुवं समानि श्री नो जरा जवर
नांम ॥ तास पुत्र हृद कत यो सत्त मुक्त को धाम ॥ २२ ॥ देव वा कु
ता कै नये नृपति परम प्रसिद्ध ॥ जा को जस निर्मल नये वर नत
मुर नर सिद्ध ॥ २३ ॥ ता को पुत्र प्रसिद्ध नृव सत धन्या वड नृप ॥ २४ ॥

तवर्माताकैः नये नृपतिपरमन्नूय ॥ २५ ॥ देवमीढता सुतनये यजुर्मी
 वडौ नरे सताकैः नये परन्य सुतजसवरनत सुवदेस ॥ २५ ॥ तिन
 के सुत आनंदमय नंदराइन के राय ॥ गोचारनिकौ धर्मलिय मन-
 कमवच अधिकार ॥ २६ ॥ मथुरामंडल मोक्षधूलवृहदारण्यनि
 कास ॥ श्रीकृष्णपुत्र आनंदमय नंदीस्वर कियो वास ॥ २७ ॥ नृगुरि
 यसारवाचार यहि वेदगर्भ सुषरूप ॥ वर्ननलागे हेतसौ सारवा-
 चार अनूय ॥ २८ ॥ इति श्रीनंदवंसावतं ॥ ॥ अथ श्रीवृषनां नवं स-
 वर्ननं ॥ ॥ दोहा ॥ सिधिश्रीसवगुननिजुतकश्युगोत्रउदार ॥
 सरजवंसयवित्रअतिनयेरतिनां ननुवार ॥ २९ ॥ तिनको राव सु-
 नाननयराज कियो नवखंड ॥ पुत्रप्रीयपाली प्रजा कहि पुरान
 ब्रह्मंड ॥ ३० ॥ उदैनां नतिनकैः नये सुजसयजुमिविष्णुत ॥ अरि
 हनां नतिनकैः तनयजसवरन्यो नहि जात ॥ ३१ ॥ कंजनां नन-
 ये राववडजाकी कीरतिसार ॥ वरनतसुरनरहितनरे सरस-
 पुत्रउदार ॥ ३२ ॥ तिनकैः सुतसुषदै नकौ महीनां नवडनूय ॥
 तिनकैः श्रीवृषनां नजूरजतपरमन्नूय ॥ ३३ ॥ तिनघरिकीर-
 तिपतिव्रतारत्नगर्भसुविचार ॥ जिहिं प्रगटी श्रीराधिकारु-
 परासि सुकुमारि ॥ ३४ ॥ रावरगांवनिकासवरवरसांनै कि-
 यो वास ॥ कुंदेवतदिनमनिविमलतिमरहरनपरकास ॥ ३५ ॥
 वरनै साखाचार यहदै असीस सुषयाइ ॥ वरकंन्याचिर-
 जीवही और सुदीरघ आयु ॥ ३६ ॥ चिरवरसांनौ वृषनां
 नजीतंदीस्वरनंदनाइ ॥ चिरकीरतिजसुमतिमहरिडुङ्ग-
 कुलदीरघ आयु ॥ ३७ ॥ दिनदिनबाहो संपदा दिनदिन वा-
 हो प्रीति ॥ दिनदिन गोधनवृद्धिकै हो अरनि सौं जीति ॥
 ३८ ॥ गौरस्यामजोरीवनी उपमां छिति यन होय ॥ वसो हियें
 जयकामकै और नजावै कोय ॥ ३९ ॥ इति श्रीदोर्वकुलवर्न

ननामसारवाचारसंपूर्णम् ॥ अथ नाव्याणि गृह न को ॥ ॥ २३ ॥ ॥
 छंदश्चाल ॥ नयौ सारवाचारसुहायौ ॥ प्रोहितसंकल्पकरायौ ॥ त
 वयाणि गृहणाविधिकीनी ॥ वज्रद्विजनिदहनादीनी ॥ दर्शदक्षि
 नावज्रद्विजनि कौंठिगाइं जतारी सवै ॥ वैगइं दहिन नागलाडिली
 कुलसिउं मेमोहन तवै ॥ कुलसिउं मेमोहन तवै नईं चहत निसिदिन मन
 जोई ॥ मिली प्रिया परम सुहां वनी जा समन त्रिचुवन कोई ॥ १ ॥ दर्श आ



कृति घृतचौरासी ॥ सुतौ जानत वेद अन्धासी ॥ चारि कुजुग का विधि
 जेसी ॥ सुतौ वरनिसुनाई तैसी ॥ वरनत सुनाई तैसैं ही अवदर्श जुनां
 वरिहित नरी ॥ दिव्य सुमनन को सुहाई स्वरनित ववरषा करी ॥ सुम
 नस्वर वरषा करी स्वरवधू सव वारेंगई ॥ देषि छवि छकिर ही सव हं
 नूति अपनौ तनगई ॥ २ ॥ रची सपत पदी छवि वारी ॥ मांगे सप्त स
 सवद सुकमारी ॥ वेसवद प्रगट जग मांही ॥ तातैं मैं वरनें नांही ॥

क० वि०
२१

वरनें सुताते मै न हं वे स व द पर म सु हा व ने ॥ दी ये जु मो ह न ला ल त व ही न
ए म न के ना व ने ॥ न ये म न के ना व ने त व आ प ही भा ग त न ये ॥ ती न स व द
वि नो द का री ह र षि ते प्पारी द ये ॥ ३ ॥ त व वं म ना ग हित नी नी ॥ वै षा री स



खि नि प्र वी ना ॥ द यो वं द न शी स मु हा यो ॥ त व वि प्र नि ध्रु व द र सा यो ॥ द
र मा य ध्रु व दि यो मं त्र उ त्त आ मि का अ ति ह त न री ॥ चि र जी व दो ऊ डु
ल ह ॥ हु ल ह नि र हो सं य ति नि त न री ॥ र हो य हं सं य ति नि त न री ॥

रुधीति दृढनिश्चयति नई ॥ नईधमुदितसहचरी सवचहतही सोई नई ॥
 चहतही सोई नई अवही सवहिं के सुषकारनै ॥ चले अंतरये हकों जै क
 धनजनगयो वारनै ॥ धा ॥ राग गौरी ॥ ज्ञावरिलेतपीय अरुप्यारी ॥ मधरमध
 रयगधरत अवनियरनंदनदनदृषनांत दुलारी ॥ मोरमनोहर मोहनकै सि
 रगधाकै मोरी सरसवारी ॥ मुखमरुवटिके सरिकी सजनी वेसरिकी छवि
 येवलहारी ॥ मनुइ दुबं धे जगमग मंडलमै रूपसुधाकी वारी ॥ नीलपीत
 पटगां विअनूपम किधौ धन दामिनि अवनियधारी ॥ तिलजौ पांडु
 तमध्य डारत मंदमंद करवै अग्यारी ॥ इकदिमिसाखाचारय है द्विजकुं
 मिरहे हजके नरनारी ॥ कल्यादां न जानवहु दीनौ गउगज हे मरतन



रिधारी ॥ पीरे करि दिय हाथ डुक्कनिके विवसनये वावामहतारी ॥ ज्ञा
 रिलै वै जे वदं पतिललिता आरति हरषि उतारी ॥ चञ्चुजपनुगिरिध

रछविनिरयतवरयतदेवसुमनसुषकारी ॥ ६५ ॥ रागदेवगंधार ॥ आजु
 कीछवितकहीकछुजाई ॥ गावतललितादिकआनदनरिनईसुम
 नकीजाई ॥ आगोंश्रीवृषतांतनुतावनियाछैकुंवरकजाई ॥ देतनांव
 रिपटतद्विजगनरहीहगिगनिधुनिछाई ॥ वारियेधनदामिनीयहछवितहैं
 कहंयाई ॥ हितजैकछनिरषिउरअंतरएहीध्यानसदाई ॥ ६६ ॥ रागनटः ॥
 मजनीगावोमंगलचार ॥ चिरजीवोवृषतांतनंदनीदलहनंदकमार ॥ मो
 हनकैसिरमौरविराजैराधागलनौसरहार ॥ नीलावरधीतंमरकीछविमो
 नाअधिकअपार ॥ मंडफछयौदेखिवरसांनैवैठेनंदउदार ॥ नावरिले
 तप्रियाअसुप्रीतमतनमनदीजैवार ॥ यहजोरीअविचलहंदावनकी
 डाकरतविहार ॥ संतनकेजुमनोरथपुरवंतरहरिप्राणअधार ॥ ६७ ॥
 नावरिनवननांतकेसजनीहोतहैंआजुदेखिवौकीजै ॥ जोरीगौरस्या
 महेसजनीनिरषिनिरषिनैतनिसुषलीजै ॥ मधरमधरयगधरतअव
 नियरधन्यघरीनिमिशहिंसुषजीजै ॥ वेदीविधिवतविप्रदुहंदिमपटत
 हसुनिअवननिसुषदीजै ॥ कुकीजरौषनिनामिनिगांवैदंमिनिडुनित
 हेंवारनकीजै ॥ नावरिलैवैवरतनसिधासनललिताआरतिकरिमन
 रीजै ॥ वरयतयज्यदेवहुंडुनिकनितनमनधननौछावरिदीजै ॥ क
 क्षदासगिरधरनछवीलेरगमगरंगराधाकैरीजै ॥ ६८ ॥ कवित ॥ ममेत
 वरिके ॥ होतहैविवाहआजुनवननीरनांतकैवितांतानिजुंमिरहो
 गावैकुकितारिरी ॥ गौरस्यामअंगकिरनिमंडफतनफैलिरहीमोरीमो
 रमरुवटिलषिमहदीपदयानिरी ॥ नावरिनलेतजोगइलियेदीयेस
 वनीजिरहेवाहीरंगरीजिवारेपानरी ॥ दुलहनितनलाडिलीसुद
 लहनितनवललालकसावतिवारिकेरिगावैमीगीतानरी ॥ ६९ ॥
 पुनः क ॥ देखिछविमंडफमनिजटितयंतलंगेतहांजुंमिचकुंदोरदि
 गमोतिनकीजालरी ॥ अरुनवरनचित्रतामैकोकिलयिकमोरमोरक
 रसुकसारौलपितरवरकीडालरी ॥ नंददृषनांतनधीरवैवेचऊगोयनीर

॥अथ नाव दधानाती मां यषु जनकौ॥२६॥

गौरस्यामव्याहविधिहोतहैरसालरी॥दुलहनितितलाडिलीसुदुलह
वृजसुंदरवरकृष्णावतिवारिप्रांतनईहैनिहालरी॥६७॥दोहरा॥
नावरिलैवैठैजुगलछिनछिनछविमरसाइ॥ललिताकंचनधार
सजिआरतीकरतवनाइ॥६८॥कीरतिअरवृषनाजूगहनरिप्रे-
मसमाज॥अवलगहमरीगाधिकाचईयगईआज॥६९॥काचैविं
नावरिलैचधनगवनकीनौदंपतिजूवैवीचकुंओरनीरबधूरूप



आगरी॥वृजसुंदरवरधूजैदेवजांनतनकछेजेवतुमुरैकलथ
हीसेवविहसियरीनागरी॥दधानातीदोऊमुखलेतकौरअद
लिवदलिकवहंपियविवसहोतदेधिरूपसागरी॥सोषसाद
याइकृष्णावतिनागमांनिरीवषांनिउगीहोजअटलगाधिका
मुहागरी॥७०॥रागनैरौ॥प्रातबहारमकरवाजेवजिमंडफआं
निजगांवै॥वहलसुपहलव्याहकीउमगनिमहलमहलदरसंवै
नोवतिअससहनाईजेरीतालमृदंगवजांवै॥तेरितेरिवंदीजन

॥अथ नावसषासहित कुंवर कलेउकर॥

तहेः॥११॥

क० वि०
२३

मागधदोउऊलकीरतिगावै॥११॥रागविलावला॥कुंवरकलेउक
रिहैगुपाल॥मंडफतरमंडलकरिवैवेमधिहलहनंदलाल॥कुंड-
निऊंमिश्राईनवनागरिजनुलयटीगीलतमाल॥धूंघटपटमैंकर
तकटाहनिजनुदांमिनिकौंधतितिहिंकाल॥केनुकीकसमनिकी
रधिपातरिदौंताकमलदलनकेहाल॥औरसुदिगडिगसीतलजल
नरिजारीउजलमहारसाल॥जुरिहजनारीगारीगावैकोकिल-



लकंठजुकरतविहाल॥पूरीपूवाजलेवीधुरमांछाजसेतसुहा
सुलाल॥मांवीमवरीकैनीलडुबाघेवरवावरपरमरसाल॥औ
दनपहितिधीरअरुदधिघृतसिपरिमगामिरधिवऊजाल
नोजनकरतजमकिकरकंकनमदनमीनपरिरूपसुजाल॥
अचवनकियोतवमकमंगलमुखऊंऊमलियद्योदोरिवाल
हमेयरस्यरमुदितमगनमनकृष्णवितिलखिनईनिहाल॥१२
॥अथ॥कुंवरकलेउकरैहलहकनैया॥मंडफदिगमोतिनक

॥ अथ नावश्री कृष्णधिका कौक्यवेदे ॥

॥ १२८ ॥

कालरिकन कखंननगछविअधिकैया ॥ सुवलसुवाऊं श्रीदामा
संगीमधमंगलवलिजसुनैया ॥ पीतांबरदुतिदांमिनितनघ
नकरकंकननखनजमकैया ॥ ललितादिकगुनसागरनागरिजि
मकिऊरौषनिगारिसुनैया ॥ श्रीवृषनांनकेधांमऊलाहलवा
जेंदुंदुनिम्याहवधैया ॥ परसगमप्रियावृजसुंदरकृष्णवतिछ-
विपैवलजैया ॥ १२९ ॥ रागजैतश्री ॥ नैननियामदछकीडुलहनि
उवटिऊवाइ ॥ कीरतिजूहसिकैकह्योतमंजनडुऊंनिकराइ ॥ धू-
घटमेंहसिहसिपरैहोवाढीकैअनघाइ ॥ मटकतनैननचाइकै-



होबोलनिमारतजाइ ॥ विविधिनान्तिकेतैललैहोवुमकतिच-
लीसुनाइ ॥ लंगरताकीचतुरईहोकछुनैननिमेंमुसिकाइ ॥ इक-
दिसिवैवेसांवरैहोछविवरनीनहिजाइ ॥ इकदिसगधालाडि-
लीहोअंचलओटऊवाइ ॥ कंगहीसौसिवाहेकैहोपुनिमंग-
संवारतजाइ ॥ पगनिमहावरिन्नरतहीहोहरिअरजीसहजसु-
नाइ ॥ निरविदशाओरैनईहोगतिमनगईविकाइ ॥ श्रीकमल

क० वि०
२४

नैनहित सौरंगी होत डही परति अकुलाइ ॥१४॥ दोहा ॥ जनवा से कौ
तव गये आनंद मोद बदाइ ॥ निरखत सो ना जुगल छवि नंद राइ सुष
पाइ ॥१५॥ अथ वतार तो जन वर्नन ॥ छंद चाल ॥ जै वन वार वतार
करत कौ विष प्रवीन पग यौ ॥ ब्रज पति निकट जाइ कस्यो अमै चलि
ये समै सुहायौ ॥ चले वजंत्री आगें आवत वृज पति आदिरि जावत ॥
दृषनां नहर विआदर करि लीनै नारि अटनि चटि गावत ॥ मनि मय
पटारत नटि गजारी धारी सलिल धुवाई ॥ परसन लगे जगमगे धारनि
हाथ उदार मिठाई ॥ प्रथम पिरा कर कानाइ कसे परसी सरस जलेवी
मांवी महामधुपम मधमी कीनी हंदा देवी ॥ कैनी सुधा फैन की मां
नां तायर डास्यो बूरा ॥ जै वत करत जात परसं सा श्री दृषनां ननांग
को पूरा ॥ किये सकर पारे मधु मोती मोदिक से वसिंधारे ॥ दास्यो न
रे कसार सुगंधनि मिश्रति पागि सवारे ॥ सुंदर पूष अनूप परो मे सु
ष पूरी लै आई ॥ सुंदर सरस परम अद्भुत मृदु देष नर हे लुनाई ॥ ल
लित लूचई वेल नवेली घृत करि यरी सुधारी ॥ मिश्रत वर कर्पूर क
री दृषनां न गोप की नारी ॥ या जानि सिरा जा मेवा वर कहा वर नो
अंतिकारे ॥ धेवर मन मोहन कौ असे ये सल पागिति सोरे ॥ कल्प
नी सावुनी गिदौरा घुरमां पिंड यजुरे विहीना सपाती अघरोटे
स्वाद सुधानिधि पूरे ॥ मिलि अचार घन सार मधुर महा पागे पा
के ये वे ॥ दही वरा अरु निस्त दस्योरी स्वाद स्वधा तै जे वे ॥ पागे पां
न नाग वेली के गुलर सघरे सवारी ॥ मकर सुगंध अमृत सम उप
मां कहत हिलगत सुधारी ॥ और वज्रतप कवांन यगे से ता परध
रि धरि अनै ॥ धरे फूल फल कंद मूल अति रोचकरु चिर सधानै ॥
किये सुगंध सुवन मै दाकि परे नही यह चानै ॥ अरु न पीत सर सीरु
हम घसु मन जंतुर नही अनै ॥ केते कलं दध के परिकर वर कपूर
रघुर दीनै ॥ दरसि परसि रस रासि चतुर इस्वधा पराजै कीनै ॥ धीर

षरीसषरीअतिमीठीसितासहितकरिआनी॥दरसनिआंअतिसर-
 मकरीश्रीवरसोनेंकांरानी॥वरेवीयावारीकसैंवईतेययमध्यउसेई
 रंगरूरोदूरोदृतसद्यसहितसवनिरुचिजैई॥असनधरायतिवरा-
 वडेअतिवासीदधिमेंघोरे॥कछुकजुरेकछुकांजीवोरेघाटेघारे
 कोरे॥केतेकहंविधिवेसनकेतेषटरसमेंवोरे॥नीदूततअनार
 आंवेरमनजंतुरतकेतोरे॥अमृतफलनारंगीनरियरसरससदाफ
 लनीके॥अमरषकदलीफलसीताफलघटेमीठेजीके॥नीजीव-
 कृतकरारकटीमेंपेसलयरमयकोरी॥करिवीरीवज्रमांयमृंगकीक
 छुषाटीकछुमौरी॥अतिदृतसहितकरीरसचुपरीभदाकीसीरोटी॥
 दैयतवररजनीसईसकीकिरनिलगतअतिछोटी॥विसदविसा
 लमृदुलमैदाकेपातरिमांडनिमांडे॥मिलिसेयेसकरदृतदूध-
 निजैवतकिनजूनछांडे॥लैदोरेदूरनदृतपूरनसरनरंधेरतारू
 विंवावनेंगगौरापरवरवैंगनवतियामारू॥करतवनौअतिनरत-
 नटाकौबीजनवकलातामैं॥रसमेंकस्यौरादृतोरुचिकरिलौन
 मिरचवज्रतामैं॥पालिकचूकचौरईमैथीभूरीपरसीयोई॥लागी-
 डाटपातविंजनसौंछाडतनांदिनकोई॥जैयोंजातनजातइतौ-
 परस्योपरसायोतातौ॥अतिमुकमारसुगंधशरसअतिस्वेतयी
 तरंगरातौ॥मृंगमांषअरुहरेचनांकीदारिचारिविधिधोई॥राम
 देरांधीरसज्ञअतिरसमेंकेशरिमोई॥लैदोरेपांनीसनमांनीवर
 नतबनेंतधीकौ॥परसतजसमलसतधारीसवसद्यधीवसुरनी
 कौ॥जैवतनरेजवरकरफेरतउपरपीवतयांनी॥परसतकटी
 वदीरुचिजामेंलौंगमिरचकरिसांती॥तक्रसुगंधतक्तअतिषा
 टीहरिमांगिदूसरैलीनी॥महाशुदितललितादिकगावतिगारी
 परमप्रवीनी॥छांनिमगदैधूपअगरकौमिश्रतिमोंधौजीरो॥ता
 मेंकछुघनसारपस्योहैरुचिरमनौहरसीरौ॥चोवामभरवोहासु-

गंधलै ओदनमध्यवनायो ॥ कहत आय वृंजर ज आजहम जैवन को-
 फल पायो ॥ बांधो दहीगारिगाढे पट करीगारि वांगादी ॥ अति सै सुख
 दस चिक्कन नीकी मन कुं सुधा तै काढी ॥ वने अने क आवनी बूके दाख्यो
 दाबनि चोये ॥ सिता सहित घनमार पस्यो है ते अमृत मद घोये ॥ जारी अ
 सन बूक घारी की फारी जल नरिनी की ॥ अच वत कहा कही बलि दाऊ
 मांगत सकुनि जी की ॥ कोमल कल फल करत करे दा अमर ससर स-
 वनाये ॥ मधुर स्वधा दूते अति मीठे काये जात गनाये ॥ जैवत प्रीतिरी-
 तिर सम कर सत पति नये वृजवासी ॥ गारी गां वैतारि परस्पर वृज ज
 नहिये कुलासी ॥ उठि वृषनांन विजन ले सोहत करि समीर कर जोरे
 किये मनाथ आजहम सब ही कहि सुषमिंध हिलोरे ॥ कीये आच मन
 मुषमुध दीये वर क प्रपुट वीर ॥ विदा करि प्रणय न्यव कृत करि चर-
 चि सुगंध सरीरा ॥ बोलिले ऊधारे ये कै है वृषनांन वंश को बारी ॥ का-
 इय कल जगदीस दास है जूठनि को अधिकारी ॥ अवन सुत तस त्वर
 उठि धायो पातरि जूठि उगई ॥ नागमांनि अति प्रीति जानि परिवार
 सहित मिलिषाई ॥ ३३ ॥ अथ गारिवर्तन ॥ रतन महल उंचै सुकुमारी
 चदिगई पगनं पुरजत कारी ॥ कुंडनि कुंमि आई वृजनारी ॥ कुकी ऊरोष
 निगां वंगारी ॥ मुनि पुरिषा कहै तिहारे ॥ चंद वृहस्पति जगरे हारे ॥ शि
 व को आय मुह दमनियायो ॥ कैगयो इला पुरवा जायो ॥ पूरु रवाइ क
 अय उर लायो ॥ नागो कै नरन निये धायो ॥ अरज जाति हूव डे कहाये
 घर मै धोरि वांन नी लाये ॥ वेद वषां नी सव मन मानी ॥ सकु सुता मुषदे-
 व वषां नी ॥ येनु महो सव ता के जाये ॥ करुं क करुं के एक कहाये ॥ देव मीठ
 के वनई रानी ॥ एक वैसि रुजी छत्रांणी ॥ कंजनांन के महल निआई ॥ हि
 नि मिलि कै रतिर मऊर लाई ॥ दोउनि मिलि कै वै सुत जाए ॥ सर मै नियर
 तन्य कहा ॥ गोपर जयत पस्या कीनी ॥ तवनारद मुनि आजादीनी ॥
 कहना सुत परम नदारा ॥ नांती सुंदर स्याम कुं वारा ॥ तौ लौना की

तिया कलोली ॥ रहिन सकी छैल निपै डोली ॥ नां मवरेशी नंद हजये
 नां ती सुंदर स्याम सुहाये ॥ अस हलह को पटिला नां ती ॥ नरि जो
 वन में अति अकुलां ती ॥ वे मां रे मां तु मुरी मां ई ॥ धर म नां न के धर
 में आं ई ॥ सा नंदा आनंद नि फूफी ॥ मोहिलियौ जग पर म अनू
 यी ॥ संकरषन की रोहिनि माई ॥ वसुदेव छां डिनंद धर आई ॥ प्र
 थम देव की गर्न सुआए ॥ मुनिरी वज्रि रोहिनी जाए ॥ धर धर म
 प्यायें चैं डोली ॥ कैं करिकाया वची कलोली ॥ और सहो जावहि
 नितिहारी ॥ हमरे आदामां सौं प्यारी ॥ गोरीज सुमति नंद सुहाये
 करि कछ कहे कैं जाये ॥ वडी महरि उपनंद की रां नी ॥ मिली ह
 वनां न सौं किन ऊन जां ती ॥ १४ ॥ पुनः गारि ॥ राग --- ॥ सुंद
 र स्याम शिरोमनि तुम कौं दै हिकहा कहि गारी हो ॥ वडेलोग के
 ओ गुन वरन त होत सकुच जिय नारी हो ॥ माया नटी कुटल नट
 चेटक कौं न न लाई पाई हो ॥ यह चंचल ताजग सव मोह्यो जैं हैं ते
 हं न ईह साई हो ॥ पुनि तुम प्रगट नये वारे तैं कौं न न लाई कीनी
 हो ॥ मुक्ति वधू उत्तम जन लाइ कलै अधमनि कौं दीनी हो ॥ वसि
 डि जीन के लाल चक्रे गये घृत पराये हो ॥ सो धर छां
 निके तुम संनें नवन जुडाटे हो ॥ ता धरि वै विनि संकरं कलौं द
 धिके ना जन चाटे हो ॥ आप कहाय धनी के लोटा नात कपन के
 मां प्यो हो ॥ मां न नंग पै दू जै जाच्यो नैं क सकुच न हिला ग्यो हो
 पुनि वज्र गो कुलगोपि निके तुम संनें नवन हं डारे हो ॥ ज मुनं
 नात गोपकं न्य निके कै निलज पट चारे हो ॥ सव को उकहैं नंद
 वावा कौ धर न स्योरत न आ मोलैं हो ॥ गर गुंजा सिर मोर पधो वा
 गाई निकै संग डोलैं हो ॥ वै न वजाइ विलास करत वन वोलिय
 राई नारी हो ॥ ते वातें मुनि राज सनामैं कै नि संक विस्तारी हो ॥

जसना कौ वै वन हारौ कौ न त्रिपति संग नां चो हो ॥ अथ ज सहित रा
 जमार गमैं कुविज हिंदे वि सु रा चो हो ॥ लै लै न जे राज कंत्य नि कौ कैं
 न न लाई पाई हो ॥ सत्य नां मां जु गौ त मै व्याही नैं क कुला जन आ
 ई हो ॥ अथ नी सहो दर आय हि छल करि अर जुन संग न जाई हो ॥
 नो जन करि दासी सुत कैं ग्रह जा दौं कुल हिल जाई हो ॥ कपट कु
 टिल चट नां टक चेट क जंत्र मंत्र सब जानैं हो ॥ या तैं न ले न ले सब
 हिन कौ न ले न ले करि मां नैं हो ॥ वर नौं कहा जथा मति मेरी वेदन
 पार न पावै हो ॥ दास गदा धर की यह महि मां गावत ही उर आवै हो
 ॥ ३५ ॥ राग विलावल ॥ मोहन दृष नां त कैं आये ॥ तव अति रस
 योति जिमाये ॥ नाना विधि नई र सोई ॥ तहां जैं वत अति रुचि होई
 तहां मिलि जुवति वड नागी ॥ गां वै कृष्ण चरित अनुरागी ॥ तहां
 बोली इक दृज नारी ॥ मिलि दैं हिल ला कौंगारी ॥ इक गारिक हा
 कहि दी जै ॥ गुन औ गुन सरस लही जै ॥ या के दोष पिता सब जानैं
 कहि व्यास पुरां न वधानैं ॥ तेरी मैया अन अन नांती ॥ तुम हिलि
 मिलि वैठे पांती ॥ तेरी फूफी चरन रतारी ॥ ता कौ ज सपावन का
 री ॥ पति पंडु सबै को उ जानैं ॥ सुत आन आन के वानैं ॥ ते दुपति सु
 ता सी जानी ॥ सो पंच पुरष मिलि लाजी ॥ ता की जग विदत वडाई
 सो जनक सिरो मनि पाई ॥ तुम व सु देव कैं जाय ॥ सुत नंद गोप के
 कहाय ॥ तुमरी वहनि सहो दाकारी ॥ सो अर्जुन संग सिधारी ॥
 छाडे डुर्योधन राजा ॥ तुमरे कुल हिन आई लाजा ॥ करि करि अ
 धनौ मन नायो ॥ अथ नौ ज सजगत जनायो ॥ सब हें सह संवै गो
 गारी ॥ पट आट करैं सुय आरी ॥ ललिता दिक यह ज सगावै ॥ सु
 निसर स्याम स पुयावै ॥ ३६ ॥ युन गारि वन न राग ॥ नवर
 ग सुमाइति हारी लला ॥ जिनि मोही सुव सुधा सारी लला ॥ सम
 धनि वर सो नैं आइ लला ॥ सो की रति न्योति वलाई लला ॥ दृजन

गरिगावैलला॥ सुतौहसिहसिरंगवढावैलला॥ लटकिवलतगज
 गैनीलला॥ सुतौतनमनसवहरिलैनीलला॥ पगपाइलवाजतअ १
 छै॥ वज्रछैललगेरहैयाछै॥ वाकौलहगाधूमधुमारौ॥ उरकंचुकिप
 रषंगवारौ॥ वाकीसांदिगिसुकिनारी॥ दुतिदांमिनिहंवल्लिहारी॥ २
 वाकीमांगमहारसत्तीनी॥ यहरविपदिकरीत्रिवैनी॥ याकीचोरील
 टकैनारी॥ छविनागनिसीसटकारी॥ याकीकेशरिआडसवारी॥ न
 कवेसरिकीछविन्यारी॥ याकेनैनवडेकटिषानी॥ मनुआपविध
 ताकीनी॥ याकीहसनिदशनदुतिहीरा॥ मुखविंदरचेमनुवीरा॥
 याकीबहियांगोलसुधारी॥ करचूरीचमकतनारी॥ जसुमनिसुय
 हवतलीनौ॥ जिनजोइमांग्योसोदीनौ॥ कारेशिरकोसबलोई॥
 इनछांझोनांहिनकोई॥ पुनिमीरमुलकमहागाढे॥ करजोरिर
 हैदिगगढे॥ पुनिमीरमुलकमहागंने॥ सबयाकैहाथविकाने॥ य
 हगारीललहिंसुनावै॥ जनवाजीदपरमपदयावै॥ ३॥ इतिगारि
 अथपातरिवर्तनां॥ रागधरवी॥ दोन॥ कलवरनतनगौरछविनिता
 नंदअनिगम॥ श्रीरूपसनातनजीवनतटवृंदावनवसिधाम॥ १॥
 तिनसबकेयदवंदिकैकृपालेशकोपाइ॥ वरसानैनिजमाहकी
 पातरिरचीवनाइ॥ २॥ ललितैवज्रवनितासहितजमकिजरोष
 निआइ॥ दांमिनिमीदरसीतहारतिपतिरखौलजाइ॥ ३॥ जहांव
 गतीजेसषावैसरूपसमस्याम॥ नंदादिकमंडफतैरैवैवेअतिअ
 निगम॥ ४॥ जारीजलनरि करगहीछविसौंधायेहाथ॥ अरस
 परसपरहासिकोंमधमंगलहैसाथ॥ ५॥ कोलिउठेवृषनांन
 तवअवक्योंकरतअवार॥ हाथनिकंचनथारलैदौरेनव
 लकवार॥ ६॥ षटरसचारिविंजनरचेअनंत॥ परसनलगेउदा
 रमनमधमंगलहरयंत॥ ७॥ ललितादिकनिरषततवैक
 रतकटाचनचोट॥ गारीदैहिंसुहांवनीकरिघूंघटकीओटः॥

॥अथ नाववहारभोजनहोतहः॥ ॥२५॥ ॥

॥द्विर्वि॥

२३

॥८॥ दोह ॥ विविधितांतिपकवांननरिपातरिधरीसजोइ ॥ तववांधी
सबसधिनिमिलिप्रेममगनमनहोइ ॥ ९ ॥ कंदलनाबोलीवचनसु
निहोकंवरसुजांन ॥ विनछोडेभोजनकरौतौजसुमतिकीहैआनः ॥



॥१०॥ यहसुनिमधुमंगलतवेवोलोवहुतरिमाइ ॥ वांननकीपातरि
विनाअसमववांधीजाइ ॥ ११ ॥ यहसुनिहसिकैवचनतववोलेनंद
कुंमार ॥ वांधीतुमअवलानिमिलिसुवलछंडावनदार ॥ १२ ॥ यहसु

॥ अथ नव दृश्य नाना वन का वर्नन दिख्यते ॥ २७ ॥

निहसि गहो न द्यौ छोडन लगे अहार ॥ बांधन लज्यो इवी न अति मिरवन
खतै शृंगार ॥ २८ ॥ चौथी ॥ छुटी जले वी अस संग फैली ॥ बांधो शी म फूल अ
सवैनी ॥ छुटे जुल डुवा मोती चूर ॥ बांधो मोती मांग सिद्धर ॥ २९ ॥ छुंजु शूर मां-



अति अनिराग ॥ बांधो कटिल अलक अतिस्याम ॥ छुटी जुभांटी और सु
हार ॥ बांधो वैनां वंदि सुधार ॥ ३० ॥ छुटे मगद अस हेस मी जिनि मै सु
गंध अपार ॥ बांधो तिलक जराइ को को मरि योरिलिलार ॥ ३१ ॥

छुटी इमरती अतिरसमती ॥ बांधों कटिल जौ हकी अनी ॥ छुटे तिषू टेगू जान
नाल ॥ बांधों वरनी डोरी लाल ॥ ४ ॥ छुटे सकर पारे योग ॥ बांधों नैन रैन के जगे
छुटी फूलौरी वनी विशेष ॥ बांधों कजल की अतिरेष ॥ ५ ॥ छुटी पायरी अ
वर सुहारी ॥ बांधों धीपर यजेवारी ॥ ६ ॥ दोहा ॥ बाजे वरफी सब छुटे माल पुव
जुरमाल ॥ अरुत नाशान धवंधी असु मधि चुली लाल ॥ ७ ॥ अरुत छुटे
पिरा कंते जिन के नाना रंग ॥ करन फूल अरु गुंमिका बंधे जु मुक्ता संग ॥ ८ ॥
चौपई ॥ छुटी कचौरी पूरी लुचई ॥ बांधों हसनि दसन छवि नई ॥ पेश छुटे जु
मिश्री नरे ॥ बांधों अघर विंवते घरे ॥ ९ ॥ दोहा ॥ नोग छुस बहध के जिन में
सुगंध अतोल ॥ बांधों चोप जराइ की सुंदर सुरंगत मोल ॥ १० ॥ धेवर छुटे जु
घृत नरे रंग जु नाना नाना ॥ बांधु रुचिर कपोल जुग सुंदर कुंडलिकां नि ॥
नुषती छुटी जु पचरंगी ॥ संग वावर यचरंग ॥ वदन कमल मधर सवंधो ॥ वि
बु कबुंद अलिसंग ॥ ११ ॥ दोहा ॥ छुटे अंदर से अतिरस मूल ॥ कौंदा कंठ बंधे
मयतल ॥ मोहन नोग छुयो मन मोहै ॥ यदि कबंधो सुंदर अति मोहै ॥
१२ ॥ लाइ छुटे सेव के योग ॥ बांधों गुल बंध गल लगे ॥ १३ ॥ दोहा ॥ मोहन मांठी स
व छुटी दही वरे जुरमाल ॥ मोतिन की डुलरी बंधी कंठ सिरी जुरमाल ॥ १४ ॥
चौपई ॥ छुटी रसोई करी सुधार ॥ बांधों चंद्र मेनी हार ॥ छुटी धीर जु आछें रं
धी ॥ मोतिन की हारा बलि बंधी ॥ १५ ॥ दोहा ॥ दूरा अति उजल छुटो घृत
कपूर महकाय ॥ बांधु मूल अंगद बंधो निहि छविक हीन जाइ ॥ १६ ॥ राइ
नोग जिनिवा छुटे नात जु नाना नाइ ॥ लटकत जावे जिहि बंधे बाजू बंध
जराइ ॥ १७ ॥ चौपई ॥ छुटे मृग अरुत अति हरे ॥ बांधों नुज बंध निविच वरे
नुषती मग छुयो अति रंग ॥ बंधी पछेली चूरी स्याम ॥ १८ ॥ दोहा ॥ कोम
ल फूल का छुटे विसाल ॥ बांधो छत्र जटित नग लाल ॥ छुटी मुगौरी
अरुत वरी ॥ बांधों यकुंदी मीनां करी ॥ १९ ॥ दोहा ॥ वरे पकौरा सब छुटे
जेवर नैन हि जाइ ॥ मोतिन के गजरा बंधे अरु गूजरी जराइ ॥ २० ॥ दोहा
छुटे राइत कली गुपारी ॥ बांधों रतन चौक जहां गरी ॥ छुयो पितौर जुनी

कौरंधौ ॥ आरसि अंगुस्तानों वंधौ ॥ छुट्यो वसों धौ सुंदर दही ॥ वंधे
 अंगुं नी छले सही ॥ २१ ॥ वरे मग के छुटे विसाल ॥ महं दी रंग वंधी
 अतिलाल ॥ लय सी छूटी सुंदर नारी ॥ चंपक ली उर वंधी जु न्या
 री ॥ २२ ॥ दोहा ॥ पीत ज्ञात मिषर निछुटी ॥ जामैं वज्र त सुगंध ॥ वंधी
 कंचुकी जर कसी अर मषतूली वंध ॥ २३ ॥ चौपड़ी ॥ कचरी छुटी
 अनेक जु कीनी ॥ त्रिवली नानि वंधी कटि जीनी ॥ पापर छुटे
 सलैं नें सेत ॥ वंधी जु फों दी अति छवि देत ॥ २४ ॥ दोहा ॥ वेसन
 की अझुत छुटी तरकारी जु अपार ॥ मषतूली नी वी वंधील
 हंगा वस मै दार ॥ २५ ॥ चौपड़ी ॥ छुटे मुरवा वरनै कौन ॥ मुषर किं
 किनो वंधी सुठौं न ॥ न्यौं जी छुटी नाना नांति ॥ टिगि वंधी मो
 तिन की पांति ॥ २६ ॥ दोहा ॥ किसि सपिस्ता आदि दै मे वा छु
 टे अनंत ॥ रंग सौ सती सौ सनी सारी वंधील संत ॥ २७ ॥ चौपड़ी ॥
 नाजी छुटी कही नहि जाई ॥ वंधी किनारी अति जिम काड़ी ॥
 छुटी तोरई जरि वनाई ॥ जे हरि वंधी जरि जु जरई ॥ २८ ॥ छुटे
 जु बैंगन अरई सैम ॥ वंधी गृजरी नूपर हेम ॥ छुट्यो रतालूकंद
 जु और ॥ पाइल सौं वंधे रम जोर ॥ २९ ॥ दोहा ॥ सव तरकारी की
 कहै वटै अंश विस्तार ॥ तातैं अव वर्न न करौं नाना नांति अचा
 र ॥ ३० ॥ टैंटी नी वू आदि सव अदरष छुट्यो वनाइ ॥ पाइ जे व
 मी नां करी वंधी फवी जे पाइ ॥ ३१ ॥ आं वल्लि सौरे आं वरे पुनि
 छुटे जमि कंद ॥ अनवट विछियनि सौं वंधे अझुत दशन ख
 चंद ॥ ३२ ॥ जारी छुटी जल नरी सीतल सुगंध अपार ॥ चरन ल
 गी जाव क वंधी तामें रंग अस रार ॥ ३३ ॥ चौपड़ी ॥ और अचार
 जिते कां नये ॥ रसना एक न वरनै गये ॥ विंजन नोज ना दिव
 रु सार ॥ कहतै कहैं न पां वै पार ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ दौं ना पातरिस
 व छुटे अस सुगंध मह काय ॥ मषमल जूती जर कसी वंधी जु

अतिजमकाइ ॥३५॥ इहिविधिसव छूटे सरसविंजनवक्रतप्रकार ॥
 मृगनैननिकेसवंधेसिषतषतेश्रिगार ॥३६॥ सुनिकोपीगोपीसवे
 मनमैअतिआनंद ॥ तनतोरैजोरैनयनहेरैमुखवृजचंद ॥३७॥ रसम
 लिताललिताजुतवरिसवलिताजुविसेष ॥ मोरचंद्रिकाआदि
 देवांधोनटवरनेष ॥३८॥ चरनकमलनषचंदमधिछुद्योजुजा
 वकरंग ॥ मोरचंद्रिकासुविबंधीमानौधुजाअनंग ॥३९॥ अनव
 टविछियावाजनेपाइजेवछुटिपाइ ॥ कलगीमोतीनगसहितवं
 धीजुअतिधिरकाइ ॥४०॥ **चोपई** नूंपुछुदेवजेमतमोहन ॥ तुरण
 वंधोपरमअतिसोहन ॥ छुटीगूजरीअधिकविराजै ॥ रतनयेचवं
 धोछविछाजै ॥४१॥ **दोहा** ॥ जेहरितेहरिसवछुटीजेहरिमनको
 लेत ॥ वसमैकोसिरपेचसिरबंधोअतिछविदेत ॥४२॥ लहं
 गामहंगा मालकोछुटीजुवसमैदार ॥ पाघजरकसीअतिसु
 रंगवांधीछेलसवार ॥४३॥ **सोरठा** ॥ पोईसुंदरपाटछुटीजुफूं
 दीहेमकी ॥ ऊंऊमतिलकलिताटसामलिवैदीमधिवंधी ॥४४॥
चोपई ॥ कसकटिकिंकनिछुटीसुगव ॥ वंधोमकारिकाप
 त्रवनाव ॥ त्रिवलीनानिछुटीछविअंन ॥ नृकटीबंधाधनुषम
 नुमैन ॥४५॥ **दोहा** ॥ मोतिनकीहारावलीछुटीजुअतिअनिर
 म ॥ ऊटिलसचिकनअतिबंधीअलकैफसेजुकांम ॥४६॥
चोपई ॥ छुटीनरवसीकहंवैनै ॥ धंजनसेअंजनबंधिनै ॥ कं
 चुकिछुटीजरीबंधवारी ॥ वसनीसघनबंधीअतिकारी ॥४७॥
 छुटीचंद्रजसैनीहार ॥ नामावेसरिवंधीसुदार ॥४८॥ **दोहा** ॥ छुटी
 चपकलीमालउरगलनृषनछुटिअंन ॥ अतिकंडलनगज
 टितसोबंधेजुवाहनमैन ॥४९॥ अंगुस्तानोंआरसीछुछु
 टजुयास ॥ तिलकयालअसैबंधोतिमरडिनविधत्रास ॥५०॥
 मुदरीछुटीजराइकीरतनचोकनगलाल ॥ अधरविंवतिअ

तिहिं अतिवरे वधे जु मधर रमाल ॥ ५१ ॥ जटित मुलाल छुटी जहांगीरी
 दसन पांति मुख वंधी जु वारी ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ गजराय ऊंची गजरी चुरी स्याम
 छुटियास ॥ मुरली रसजुरली वंधी अधरा मृत की आस ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ छुटे नग जटित विशेष ॥ कंबुकंठ मधिवंधी निरेष ॥ ५४ ॥ कनक पछली
 ते छुटी जिन मै मीनां कीन ॥ सुरगरंगौ जरक सकियो जगा वंध्यो अति
 जान ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ छुटे राउ परम अनिरांम ॥ वंधी पचलरी मुक्ता दांम ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ कनक सतम पतल फवि छुटे जु वाजू वंध ॥ पदिक वंध्यो
 जिहिं छवि निरवि होइ कोटिर विमंद ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ अंगद छुटे जु जिहं
 छवि नारी ॥ मोतिन की दुलरी वंधि न्यारी ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ कंठ सिरी मुक्ता
 निकी तिलरी छुटी अनूप ॥ वंधी धुक धुकी जटित मनितां मै प्रिया स
 रूप ॥ ५९ ॥ गुल वंध अरु पदिक छुटि फौ दा सुंदर स्याम ॥ अतय दनु
 ज अंगद वंध्यो जु वति निमन सुषधाम ॥ ६० ॥ वदन कमल अलि बिंदु
 छुटि अधरा मृत कै लोचन ॥ वाजू वाजू वंध वंधि उपजत अनंद गोचन ॥
 ६१ ॥ हसनि दसन अरु अधर छवि छुट्यो जु सुरंगत मोल ॥ खंडु वा वं
 धे जु हेम के मीनां कियो अमोल ॥ ६२ ॥ चौपड़ ॥ छुटी चौप मधि चुन्ती
 जरी ॥ पऊंची वंधी अनूप मधरी ॥ छुट्यो मकरिका यत्र अमोल ॥ लर
 मुक्त निकी वंधी सुलोल ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ कर्न फूल अरु गुंमिका छुटे
 जु मोतिन साथ ॥ लाल नगति सौं जे जटित मुदरी वंधी जु हाथ ॥ ६४ ॥
 चौफूली वारी छुटी पीपरय ते संग ॥ वंध्यो छिगुरिया अग्रम धिमव
 दीरंग सुरंग ॥ ५१ ॥ सवन वती नथ जे छुटी चुन्ती मोतिन गैल ॥ दक्षि
 न करली लाकमल वंध्यो सुफेरत छेल ॥ ६६ ॥ चौपड़ ॥ नैननिका जर
 रेष छुटी छवि ॥ उर वन माल सुवंधी रही फवि ॥ वरुनी अनी छुटी अ
 निएनी ॥ मोतिन माल वंधी मन लैनी ॥ ६७ ॥ चक्र दी जुटी छुटी अ
 निरंगम ॥ श्रीरखा जु वंधी उर धाम ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ छुट्यो जु तिलक जरा
 इको के शरि आडलिलार ॥ रोमावलि वंधी उदर पीपरय ताकार

दए ॥ **छो** छुटि वैनां छुटि से नाना इक ॥ त्रिवली नानि वंधी मन नाइ
 क ॥ १० ॥ **दीना** वंदी छुटी जरा इकी डुं धां मोति नपांति ॥ छुट घंटिका
 जे वंधी वाजत परम सुहांति ॥ ११ ॥ **छो** अलकैं ऊटिल छुटी अति स्या-
 म ॥ वंधौ पीत पट अति अनिरांम ॥ १२ ॥ **दीहा** मोती मांग छुटी मनौ न
 डगन छुटि रहि कैल ॥ एक छोर कौ छोरि कै पटुका वांध्यो छेल ॥ १३ ॥
चोपड़ा सुरग सिद्धर छुटी श्री मंत ॥ कटिका छनी वंधी जुल संत ॥ केस
 रि पटियां छुटी सुधार ॥ चुरी दार छुटि वंधी इजार ॥ १४ ॥ सीस फूल छु-
 टि अधिक विराजत ॥ नृपुंर चरन वंधे अति वाजत ॥ वैनी छुटी जुपा-
 छेल टकत ॥ पदन वंधे चंदमनु चटकत ॥ १५ ॥ **दीहा** रसिक सिरोम
 निपीय कौ सिषन घते श्रिंगार ॥ वर्नन कियौ जु मुनिह सी दीनो हार
 तारि ॥ १६ ॥ कस्यो विसाया विहसित वसुन ऊं रसिक मनि राइ ॥ नष-
 सिषतें श्रिंगार छुटि करन वांध्यो जाइ ॥ १७ ॥ मोर वंदि काति सकल
 वांध्यो तुम सिंगार ॥ कै छो डो कै पग छुटो कै वडूत करौ मनुहार ॥ १८ ॥
 मुनि बोले तवर सिक मनि श्रान दउरन समात ॥ गदगद सुरनी-
 ज्यो हृदय कंपत पुलिकत गात ॥ १९ ॥ जिन वंधन करि मोहि तुम
 वांध्यो रस के राइ ॥ परम वंध मोचन निपुन मोयें छुटो न जाइ ॥ २० ॥
 प्रम वंध अजुत अकथ मोयें कस्यो न जाइ ॥ ज्यो ज्यो तन मन अति वं-
 धे त्यों त्यों हियो सि राइ ॥ २१ ॥ कया करौ यह लाडिली प्रेम रासि सु-
 ख धाम ॥ रहे वंध्यो आधीन तु वडूहि विधि आगें जाम ॥ २२ ॥ प्रम-
 वचन मुनि पीय के रहीन तैं कस महार ॥ उत कंठित कै प्रीया कौ दी-
 नो ललिता हार ॥ २३ ॥ रंग परस्पर अति वडो हसी सकल वृजना-
 रि ॥ वृजन तव जेवन लगे देत है श्रान दगारि ॥ २४ ॥ गारी गावत र-
 म वडो कायै वरन्यो जाइ ॥ धर सांनै वष ज्ञान के जस वितान जंम क-
 इ ॥ २५ ॥ समाजि पर रस कौ नये वृज जन हिय झल सां हि ॥ करि नोज-
 न वृज जन उगे नये जुमंगल नाद ॥ दीन डुलहनि बोलि कै वडू चष-

एक लाडिली कया विन काहु की गम ॥

नाहि ॥ २६ ॥

नपरसाद ॥ ८६ ॥ नोजनकरिहजजनसवेहामिजलासवदाइ ॥ मुनि
जनवासैजगमगेयांननदशानरचाइ ॥ ८७ ॥ नोजनवीरीकांठिकैसुषक
नौनंदराइ ॥ एतेपरहृषनांनजूपलिकाचारबुलाइ ॥ ८८ ॥ अथपलि
काचारवर्णनं ॥ रागविलावल ॥ आजविराजतहैनवजोरी ॥ हलहनं
दसुवनसुषदाइकाडुलहनिश्रीहृषनांनकिसोरी ॥ उनसिरमौरमने



हरराजतइनसिररतनजटितवनिमौरी ॥ वारौकोटिकांमजुवतीजु
तहोतनसमदांमिनिघनकोरी ॥ वैगेलिंगवनेअतिसुंदरउनैचंद
ललितादिचकोरी ॥ मुदितदेतपरिकरमांतांनसुसुषदगाविकीर
तिसौजोरी ॥ सुकतरासिसांवरोमजनीपाईप्रियाप्रमरसवोरी ॥
गगदेवगंधारा ॥ प्रियापियवैगेलिकाचार ॥ मंडफतरसोनिता

कठविठ

३१

तनदादिकं मिरहे नरनारी ॥ देतदायजो नानवडे नयहयगयन
वननरेनं डार ॥ वंसवधानतघरके जाचक पहराये मनिहार ॥ टी-
कौनेटकरायसवनि कौनेटेवां हयसार ॥ वीरीवदलिसजन दोउ
हरषेवरषेरंगअधार ॥ गोपनकैंगोधनधनप्यारौधौरी सुवच्छसि-
गार ॥ ऊंमरिऊं मिऊलमषतलनिदीनी हैलषचार ॥ जगमगसे
नैसीगसवनिके गरघंटनिरवप्यार ॥ मोतिनहारफवीपगयैजनि



चलतजननजनकार ॥ विदजनयेकीरनितनय कौलैचलिपुर
कीनारि ॥ ललितादिकतनकीपरछांहीकौं विसरै सुकुमारि
किंकरीकनिजटहलसुहितकी ऊंडचली सुषसार ॥ मननौ-
रै है ऊंवरिइ नैसंगदीनी हिये विचारि ॥ कनकलतासीलयति
रही है कीरनिकी अकवारि ॥ नेहनारकरिसीची छिनछिनके
नसकै निरवारि ॥ काकीनामीवहनिमिली पुनिफुफिनिल

कोवतवैलैगोसमोरकरीधरधनदादा

उरधारि॥ पुनिश्रीदांमसहोदरसौमिलिवदिगईश्रीतिअपार॥
मिलिवृषनांनकह्योमेरीवत्सलिजिनिरोवैसुऊंवारि॥ विवस
नयेविसरेसुधितनकीनैननिजलकनढारि॥ लैहोंवेगिबुलाइ
लडैंतीपिताकह्योपुचकारि॥ दैहोंवेगियगयनैयाकौंयोंकहि
रथवैठारि॥ यहसोनायहप्रेमविवसरसयहदृजकौबोहारः॥



यहदुलहनियाहलहर्नयरबलिकीयौवलिहार॥ ३१ ॥ कवित
राइदृषनांनकरजोरिकैंविदाकीवारकह्योदृजराजसौंनियत
सिरनाइकैं॥ लाइकनुमहारीनवनीहैकधूसीकीकहोंपीरेकरि
दीनैहाथसजनबुलाइकैं॥ तवहोइकोनौअवसौगुनौंकियो
हंनथकैसैंकहोगोथसजलीनैउरलाइकैं॥ दानसनमानया
नयांनकौनदेख्योसुन्योअगनाथनयोहोंसनाथयो
रिआइकैं॥ ३२ ॥

॥ राग गौरी ॥ ॥ गावें नद गाव की नारि ॥ आवत सुनी वगत अ
तनि चटि इकट कर ही निहारि ॥ वह देखि सजनी स्याम रं दरघो
री पर अ सवार ॥ पाछें पाछें डुल हनि कोर थर विरथ है वलिहार
आथौ दौरि अगार कुंवर इक मेवा तिल कलियौर ससार ॥ ३३ ॥



नि पाछें आगवाल रगी ले जग मग जग मग रूप अघार ॥ स्प
मो स्याम घोरि पर गढे आरती करत महरि मनि थार ॥ अर
धवदा शलिये घर नीतर कृष्णा वनि पीवै जलवार ॥ ३३ ॥ राग
कल्याण ॥ श्री जसोदा प्रमुदित करै आरती ॥ चिर अनिला-

॥ अथ नावदुलहदुलहनिनीतरलीय ॥

॥ ३४ ॥

षतसुतसुवधलेमनिनूषनवारती ॥ होयप्रेमवसतवसवहीवि
धि श्रीरोहिनि संभारती ॥ श्रीकृष्णदासललितमोदविधिवर
निसकै नहि नारती ॥ ४ ॥ अहोतुमकरौजसोमतिआरतीदुल
हदुलहनि कौमुखजोइ ॥ प्रेमनरीजुसषीसर्वंआनंदअतिउरहो
इ ॥ रतनजटितधरिथारमै दीयकजोतिसंजोइ ॥ श्रीरसिकविहो
रीरसयगेहोरहेप्रेमरसनोइ ॥ नवदुलहीराधावनीहोराखेचित

गावें



मैपोइ ॥ ५ ॥ रागविलावल ॥ मांगैसवासिनिवाररुकाई
ऊगरतअरतकरतकौतूहलचिरजीवोयहवीरकजाई ॥
चिरजीवोदृषनाननंदनीरूपमीलगुनसागरमाई ॥ निर
धितिरषिमुखजीजैसजनीयहीनेगवऊसंयतिपाई ॥ दीनीधो
रीधूमरयीरीअरुताकौंतीयरपहराई ॥ फिरिसवहिनिकीमह
रिजसोमतिमेवामोदिकगोदनराई ॥ आरतीकरिलियेरतन
चौकमध्यवैगारेसुंदरमुखदाई ॥ परमानंदआनंदनंदनैकैनाग

६९

॥अथ नावजसुमतिमयीसमाजमवैरी॥३५॥

कठवि०

३३

वडेघरनौनिधिआई॥६॥गगराइसौ॥अजसतामधिराजहीजसु
मतिमुषमांती॥सोहिलेसुतवधूव्याहकेसुषसुनतमिहांनी॥सुता
वधूगुनजनितिकीगांवैरंगरीती॥हस्तकनेदवतांवहीसुरगांसगी
ती॥लाडिलीरुयकीचाडिलीजसुमतिसंगसोहै॥छिविनिरयनतिहुं
लोकमेंउपमांकहोकोहै॥जसुमतिनवनप्रकासकौराधापगधारे॥



कोटिवधूमधिराजहीज्यौंससिमधितारे॥मुखदेष्टतनुमग्योहिये
निलनवलाई॥रतनगोदतरिवारनैंगुनिजनयहराई॥पठञ्जस
नतसुमतिनएलाडिलीपहराए॥छत्रचवरसिरपरदुरैछविदेवि
सिहराए॥हरीदासतहांसहचरीनितमंगलगाए॥उत्तीरनजसुमति
नी॥पूजनवलीकलयतरुसुंदरऔरैकानिठनी॥कियोसखिनि

॥अथनावकल्पतरुपूजन॥३६॥

॥तथाकंकनछारनं॥३७॥

गठजोरसवनिमिलिआगैधनपाछैजुधनी॥गावतचलीगीतमंगल
केसवैसुघरिसजनी॥रुनकजुनकपगधरतअवनियरछविउमगत
धरनी॥छिरकिसुगंधमूलजोरीयहवरमांग्यौरहोप्रेमसनी॥श्रीरसिक



विहारनिहोइनमानछककेलिकलाकमनी॥छागगधनासरी॥न-
हिछूटेमोहनडोरनाहो॥अहोवलिवांध्योलडैतीजूकैपानि॥प्रथम

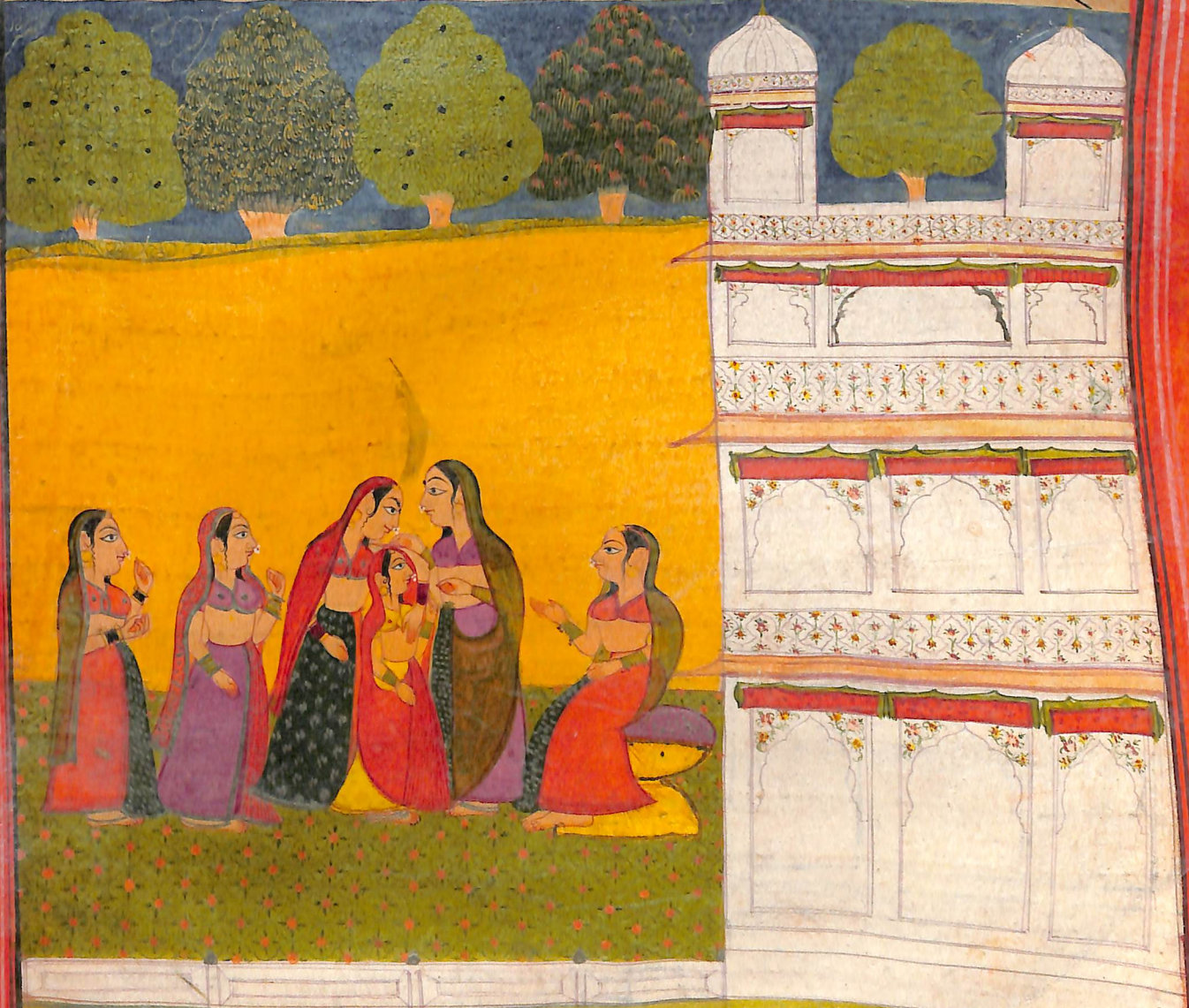


व्याहविधिद्वैरहीअवकंकनचारविचारि॥हसिहसिकसिकसिग्रंथ
धनावतिनवलनिपुनवृजनारि॥यहनहोयगिरिकौधरिवोहोसु-
निहोगोपीनाथ॥वक्रबलवंतकहावतआपुनकापनलागिहाथ॥

बडे होऊत वछोरियो हो सुनऊं घोष के राइ ॥ करजोरो विनती करै
 हो कै छुबोल डैतीजू के पाइ ॥ महज सिथल कर पल्लव निहरिलीनां
 छोरि सवारि ॥ किलकि कहैं सधिस्याम की हो अवतुम छोरि सकुमा
 रि ॥ नहि छूटै लडैती डोरनां हो वलिवांधो मोहनजू के पानि ॥ तुम कि
 त करत सहाय सरवीरी छोडो अधिक सयांनि ॥ छोरन देऊं कंवरि
 कौंकन के बोलौ वृषनांन ॥ कमल कमल करि वरनिये होया नि
 प्रियाजू के लाल ॥ अब कविकुल सांचे नए होत वन एकटी लेना
 ल ॥ लीलाल लित मुकंद चंद की कर ऊर सि कर सयांन ॥ अविचल
 होऊ सदा युग जुग येह जोरी दास कल्यांन ॥ १७ ॥ राग टोडी ॥ अहो तु
 म छोर ऊलाल लडैती कौंकन ॥ कहारहे गहि गंधकां पिकर पा
 वन परसिमनां मुचित कन ॥ श्रीतम विवसयांनि वर सत प्यारी
 निरघत गहि हसि बंकन ॥ मदन मोहन पिय स्याम सुदं पति संप
 तियाय रूप निअंकन ॥ १८ ॥ राग विहांगरी ॥ प्यारी कर कंकन बंधो
 नल होत लालन तुम धोल ॥ धानि परसि डुलही के हल ह पियरे
 नये कपोल ॥ स्वेद शिथल अति हरष हिये मै भेटी दग चंचल तालो
 ल ॥ श्रीहरि दास के स्वांमी श्यामां कंज विहारी निरघिना गरी आ
 धुही बिकाने विन मोल ॥ १९ ॥ इति डोरनां ॥ दोहा ॥ नवनय धारे ला
 लजू करि कंकन कौचार ॥ मंगल जन गावत सवै नाना विविध उ
 चार ॥ २० ॥ कविता ॥ सुनौरी जिगंनो छोर पुत्र को विवाह नयौ तुम्ह
 र प्रताप पुन्यताग ममना लहे ॥ देखि मुख पट उघारि छुबीलीन
 बलनारि अंग निनिहारि बधूनें न निविमाल है ॥ वाजे गाजे गावै
 गारि दंयति पैवारि वारि नूयन पट देत मह रिमन सैनिहा लहे ॥
 कृष्णावति चवर लिये तोरति है उमग हिये दुलहनि आराधा ह
 लहर परम जाल है ॥ २१ ॥ फूली है जसोदानंद राइ पुत्र व्याहिल्या
 य सो वर लडैती कौंजु वेटी वृषनांन की ॥ वैगीरत नचो कम धर्म मूढा

॥अथ नावडुलहनि को मुख देखे ॥३८॥

छवि छाइरही आइरही सुखतरंग अंगनि दिसा न की ॥ आवैं वधू गूंमि
गूंमि डुलहनि मुख निरखत ही ॥ मोहिर हीरहि न सुधिका हू घर जान
की ॥ कृष्णावति जंन कमन क धूं घट करि आंगन में डोलति कुंवरि संग
वारी लडकांनिकी ॥ २४ ॥ पुनः कवि च ॥ सुनिरीस हेली देखि आई हो-



डुलहैया एक दामिनी विसेषि वैरी आंगन उज्यारी है ॥ देखें विनर ह्यौ जाइ
दखन हं जात ताहि तातैं तो सौं कस्यो आइ प्रान कू तैं प्यारी है ॥ आवैं व
जना गरी देखन छवि आगरी जसौ दा कौ नागरी सराहैं पुन्य नारी है ॥ कृ-
ष्णावतिकी उपासना न और आस मोइ डुलहनि श्री राधिका मुहल है वि-

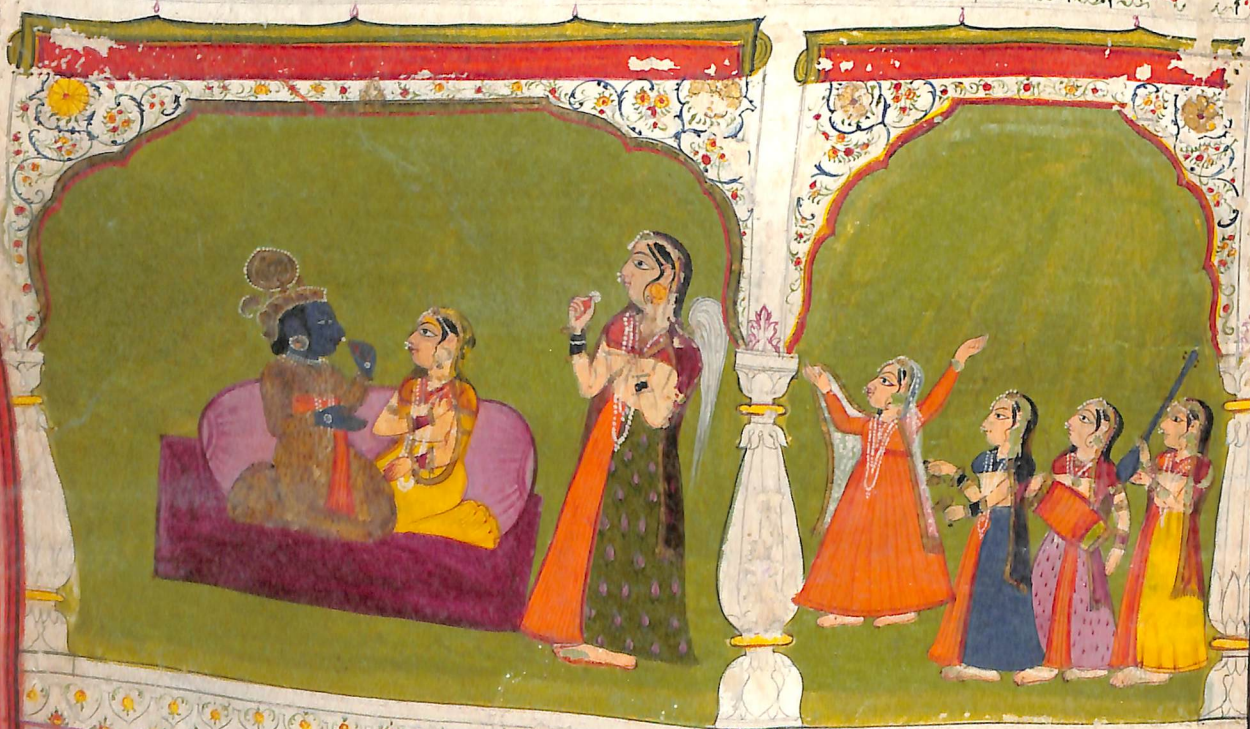
॥अथ ताव श्रीकृष्णगाधिका कीडा विलासादिकरतेहे॥

॥ ३५ ॥

कठं वि०

३५

हारी है ॥२५॥ गगविहंगरो ॥ बालनवनरी धूंघटन खोलै ॥ अघनेंरी घि
यसों रहसि हनबोलै ॥ धूंघटने रासरसमें वाखा ॥ सुघरबनीवनरारि
ऊवारा ॥ निपटनवेली सोहें कूं नचा है ॥ लाजमहेली सोनेहनिवा है ॥
चाहअलीतवअधिकसतावै ॥ दृगनिवचाइ दृगनिलखिआवै ॥ न



बललालमनउमगमहारी ॥ जानिहि तूइकवातविचारी ॥ मरदास
हियसेजसवारी ॥ मदनमोहनविलसोमिलिप्यारी ॥ ॥२६॥ कविना ॥ दृ
जमुंदरिहै दृषनांतसुतादृजमुंदरनंदकुंमारककाई ॥ राजतहैं जु
गमोहनमंदिरकंदरकामकलासरसाई ॥ सोहेंसषीललितादिकरे

रनिकिरनिप्रजाकरसंगसदाई॥ परसअलीसंगरंगरलीकृष्णावति
 कौरसरूपबुकाई॥१७॥**रागविहांगरौ॥** कौनधौसुकृतपाईरसिक
 कुंवरवर॥ राधिकाडुलहनिहलहगिरधर॥ सोहैसिरसेहरोनवलन
 योनेहरो॥ प्रथमसमागमनैनांतयेरीकलयतरु॥ छिनछिनप्राति
 वादीप्रेमग्रंथियरीगादी॥ बांहगहेशखीगदीगयौरीलाजकौउर॥ वै
 ठहैमोहनमहलतलयसुवनदलस्यामसखीजाइवलिरतिरसला
 ज्योऊर॥१८॥**दोहा॥** मोहनमंदिरमध्यकैगलीवियनकौजात॥ तहां
 कैजुगलकिसोरवरनिकसिचलतगहिघात॥ विपनिमैंक्रीडतकुं
 जविहारी॥ जथासक्तिमोलीलान्पारी॥ पुनिदंषतितिहिंसेजयैआ
 वेंतोरनयेललितादिजगावैं॥१९॥**रागनैरौ॥** आजहलहडुलह
 निवनीरंगनववधावो॥ तालमृदंगअंगअंगनिसुनिसुनिसचुपा
 वो॥ नृत्ततरतिगतिविलासउपजतमृदुवदनहासतिरधिसषीसु
 षकीरासिमंगलगावो॥ प्रियाप्रेमसुषदगांनवारतपियरीजिप्रांन
 जाननिमनिजानिनांतनंदिनीरिजावो॥ नैननिसौनैननजोरिले
 तप्रियाचितहिचोरिजगन्नाथराधापतिकैयानजियेजावो॥२०॥**य**
थाचर्चरीछंद॥ पौटेमोहनमंदिरमैंसरिवैनवजाइजगावैं॥ जुग
 लआननचंदकारनअलिचकोरीधावैं॥ गोरस्यामसुषकीरासिसु
 षदसेजकरिविलासअतिऊलासहियमैंसरिमधरमधरगावैं
 घरघरदधिमथनघोरचिरियनिलिकियौसोरउठियेवलिनयो
 जोरनैननिसचुपावैं॥ सुनतजगेगोरस्यामअंगअंगउदितकांम
 नांमिनिसंगअंसवाकुंजूमिजूमिआवैं॥ सहचरिसवजुरीआइजा
 नतनिसिकेसुनाइआलसवसअतिजम्हाइहसिहसिछविपावैं
 दांतनकरिधोइवदनमंजनवकुंतातिसदनसजिसिंगारवकुंप्रका
 रनोजनकरवावैं॥ ललिताआरतिसुकजवाजतसुरवकुंनवीन
 अतिप्रवीननैरौरागकुलसिकैसुनावैं॥ परसरामअलीसंगयांन

निरचिदेततहांआननउजामहोतहामकौहसांवे॥असीछविनिर-
 धिदोर्जदूलहअरुदुलहीकीकृष्णावतिरीजिनीजिकेंउगारयांवे॥
 २१॥**दोहा॥**नीदनरेतनलटपटेछकेडिगनिकीहेर॥नागरियांके
 हियवसौकुंजनुरहरीवेर॥२॥सधीनोरलधिछकिरहीस्यांमांस्या
 ममुजान॥मुदीपलकअलकैषुलीअधरथकितमुसकांन॥३॥ल
 तानवनललितादिसधिवजवतवीननिधान॥मुदेनैतमुसिकांव-
 हीमुनिमुनितांनमुजान॥३॥पङ्कपीरीसीरीसमैलधिदंयतिसकु-
 मार॥रंगनरेलयलांघहीउरजेहारसिंगार॥४॥**अथचर्चरीछंदः॥**
 नोरहीनिकुंजतेउविचलिहकुंवरीराधा॥अरुननैनमिथलवसनरूप
 छविअगाधा॥विधुरिवारहारअरजिआरसवसगोरी॥मनकुंमधय-
 कनकलतानिधरकजकजोरी॥सारदासचीसीलुटतिसहचरीनिचरने
 तिनकीचारचरामनिकसैंकरिवरनै॥रंगनरीतांमिनिसवसुधरसुषस
 माज॥कमलासीलीयेकरुपनौधनौ॥काहूयैअतरवरगुलावजुत
 सुगंधसीसी॥काहूयैविमलदर्पनकलक्रांतिकंच्रकीसी॥काहूयै
 सुठसुगंधसहितयानदानवीरा॥काहूयैहारआनखनजलमलातही
 रा॥काहूयैचासचमरचयलनैवरनिनिरवारै॥काहूयैकुसमकलि
 तविजनमंदमंदतारै॥काहूयैमालमरगजीहसुरतिसेजतूटी॥घा-
 वतमुधिसमैवामुमदनपुरीतूटी॥काहूयैवनकवनिधंगनियंकन-
 कपीकदांनी॥काहूयैधूपदांनवरतवजुसुगंधसांनी॥काहूयैसर-
 जमुखियमुखिमोरपछिवारी॥मुकटनावउदैहेतनहिनकरतन्यारी
 काहूयैसुधरमोरोसूवामधरवचनवोलै॥काहूयैअसवीनजोनवी
 नअरअमोलै॥आवतिधुनिजत्रमैनमंत्रसेवजांवे॥रैनिकेविहार
 गाइमादिकसोयांवे॥रंगरागतवसुहागआनंदरसवोरी॥नागरिया
 रिदेवसौख्यनानकाकिसोरी॥५॥**चायडी॥**चिरियनिबुझुबुझुसह
 सुनायौ॥जगैवलजांनुनोरकैआयौ॥घरघरदधिकेमथनाधूमै॥३

॥अथनागराधिकासासुकेपाइलगेहेः॥

॥४७॥

विवेतेआरसरसजुमे॥कोउजारीजलजरिलाई॥आनंदनारिदांतनकरवा
ई॥मोदकमिश्रीदूधमलाई॥मंगलनोगलियौसुखदाई॥वातिनिसजि
कंचनकीधारी॥ललिताआरतिहरषिउतारी॥छायेहा॥रंगमहलते
लाडिलीआईमुरजनिगेऊ॥जायमि।लीदासीसषीजियउपजायमेऊ
॥११॥लटकतिआईसेजतैंगहेसासुकेपाइ॥रोहनिजसुमतिदेविछवि
लईहियेलपटाइ॥याकविन॥न्योतेफिरैडुलहीडुलहाकरैंनोजनघ



रघरनेहनिवासी॥फैलिरहीनंदगांवमेंसंपतिदंपतिरूपसुधा
सुषरासी॥गाइबजाइलडाइलैआइकैंकैलिकरैंकमनीकम
लासी॥कृष्णावतिकहेजसुधाअरनंदजूकीनीकोउविउपु
त्पकीरासी॥ए॥इतिश्रीराधाकृष्णविवाहवर्ननसंपूर्णम्॥

॥दिना॥ श्रीराधाकृष्णायनमः॥ ॥अथश्रीविवाहवारषडीलिख्य
 ते॥चौपईछंद॥ ककाकमलनैनसोहनसुषदाई॥ वज्रमैनिन्न
 किमोरककाई॥ सागरनंदजसोमतिमाई॥ तहांप्रगटेचंदक-
 लाअधिकाई॥ १॥ धधाधरिकनिषेलतहैवहप्यारौ॥ घरअंग
 नकुलदीपउजारौ॥ वलिनेयासंगरूपकौनारौ॥ वल्लनगोधि
 निनैननितारौ॥ २॥ गगागईवातवरसोनैसरसै॥ मुनीवडाई
 आनंदवरसै॥ वैससमानजांनियरकासा॥ तवकीरतिमनन
 योकुलासा॥ ३॥ धधाधरनीतवदृषनानबुलाये॥ राधावरमो
 हनवहराये॥ अरुवरनानौसुनानसुहाये॥ वैविपरस्परसुम-
 तिसुनाये॥ ४॥ ननानंदगांवतवविप्रपठाये॥ नईसगाईलग
 नलिखाये॥ लगनमैदईछवालीघोरी॥ अरुवकुसंपतिनृषन
 ओरी॥ ५॥ चचाचाइनिचकुंदिसिधुरहिनगारे॥ फूलैगाइच
 रांवतहारे॥ जिततितकरतपरस्परवात॥ नैयाहमसवचलहै
 वरात॥ ६॥ छछाछुयोनौनतवतेलचढाये॥ छेलछवीलोउ
 वटिकवाये॥ छेलवधूखविसौमुसिकाइ॥ बांधोकांकनहा
 थसुहाइ॥ ७॥ जजायहरिजरकसीवसनअमोलै॥ घोरीचढै
 विनाइगडोलै॥ घरघरआरतीकरहिंकिमोरी॥ जहांजहांज
 यवडेनिकीयोरी॥ ८॥ ऊकाऊंभिरह्योमंडफवरसोनै॥ तामै
 चित्रविचित्रहिवांनै॥ तातरखनअनूपलगाए॥ मानौकामदेह
 धरिआए॥ ९॥ ननानागरिघरघरन्योतिजिमांवे॥ वानव्याह
 कौतेलचढावे॥ मंजनकरिछवियटपहरांवे॥ गाइवजाइलडा-
 इलैआंवे॥ १०॥ टटाटेरिनंदसवगोयबुलाये॥ नईयांतिनोज
 नकरवाये॥ जसकौयोरदमांमोवाजै॥ नंदगांवजैसंघनगाजै
 ११॥ ववाववीवगतचलेवरसोनै॥ घोरीचढिदुलहैकुलसोनै
 गैनिवहतगाडीरथजोरी॥ चढिचलियटकेसरिरंगवारी॥ १२॥

उडा डारत अछिन निकरी गोपी ॥ मोरव न्यौ सिर उय मालोपी ॥ चौंर दुंरै अ
 रुछत्रा फिरोवै ॥ जसुमति आयन नाग मनावै ॥ १३ ॥ टटा दोलने रिकरना
 लिव जाई ॥ नौवति अरु सहनाइ मुहाई ॥ आइ निकट वन वट संकेतः ॥
 तहां हूल हडुल हनि कै हेत ॥ १४ ॥ एणा एण मकि जम कि वर सां नैं आए
 दृषनांत विविधि आयो एणी लाए ॥ सजा सहित मोहन पहिराए ॥ रूप अ
 नूप मयरत चुचाए ॥ १५ ॥ तता ताते जल करि उवटि कवाई ॥ नूषन पट
 दुल हनि पहराई ॥ पांनि प्रिया कै कंकन डोरी ॥ बांधत जुवति हसैं मुख मो
 री ॥ १६ ॥ थथा हाथ निपाइ निमह दी लावै ॥ मेरी रां नी की जाई यों कहि गा
 वैं ॥ अर गोप वधू वझन्यौ तैं आई ॥ जनन जनन नू पुरधुनि छाई ॥ १७ ॥
 ददा दौरि करा ही चढाई नाई ॥ मिश्री मिश्रत विविधि मिगई ॥ वझत ना
 तिकरि नरे न डारा ॥ वरनत नां हिन पावत पारा ॥ १८ ॥ धधा धाई कुं व
 रवारो वीली नैं ॥ आरती करि जन वासो दी नैं ॥ विछी वनात वै गे जु कि
 सौर ॥ नौवति वजै लजै धन धोर ॥ १९ ॥ तनां नाम पिरोहित तुरत य
 गये ॥ अजूचलिये जै वन वेगि बुलाये ॥ पाछैं होय विवाह सुवेरा ॥ सु
 निय सद्ध जिन करौ अवेरा ॥ २० ॥ पपायाय सैं मंड फतर आये ॥ लल
 तादिक जन वासैं आये ॥ हूल हकौ नोजन करवाये ॥ २१ ॥ फफा फिरै
 परोसत छवि अधिकाये ॥ जेजे राधा हाथ छुवाये ॥ धाजे जले वी कै
 नील डुवा ॥ विविधि नीर नरि जारी गडुवा ॥ २२ ॥ ववा वैठि जे षनि
 गावैं गारी ॥ कंचन तन मुख चंद उजारी ॥ बांधी पातरिय रमर साला
 छुटाइ लई जवत गोपाला ॥ २३ ॥ ननानो जन करि कै हाथ डहा
 ये ॥ जाय जन वासैं पांन चवाये ॥ समधयलास सो जस जिलाये ॥ २४ ॥
 ममा मोहन सहित वरात बुलाई ॥ राधा सिर मोरी वधवाई ॥ वैवारे मं
 ड फतर आई ॥ ताछिन की मोहिल गोवलाई ॥ यया जग मगधे ननि
 दीप विराजै ॥ वैवेस जन तहां अतिराजै ॥ आई गं मिश्रत निच्छिना
 री ॥ हस्त हमाधत देत है गारी ॥ २६ ॥ रगरे बुझी गोधूरि कसो है ॥ वेदी

बैठे पाटं व
 र सुविछा
 ये ॥ ११

जूठि उठी
 तव चौं क
 धुवाये ॥ ५

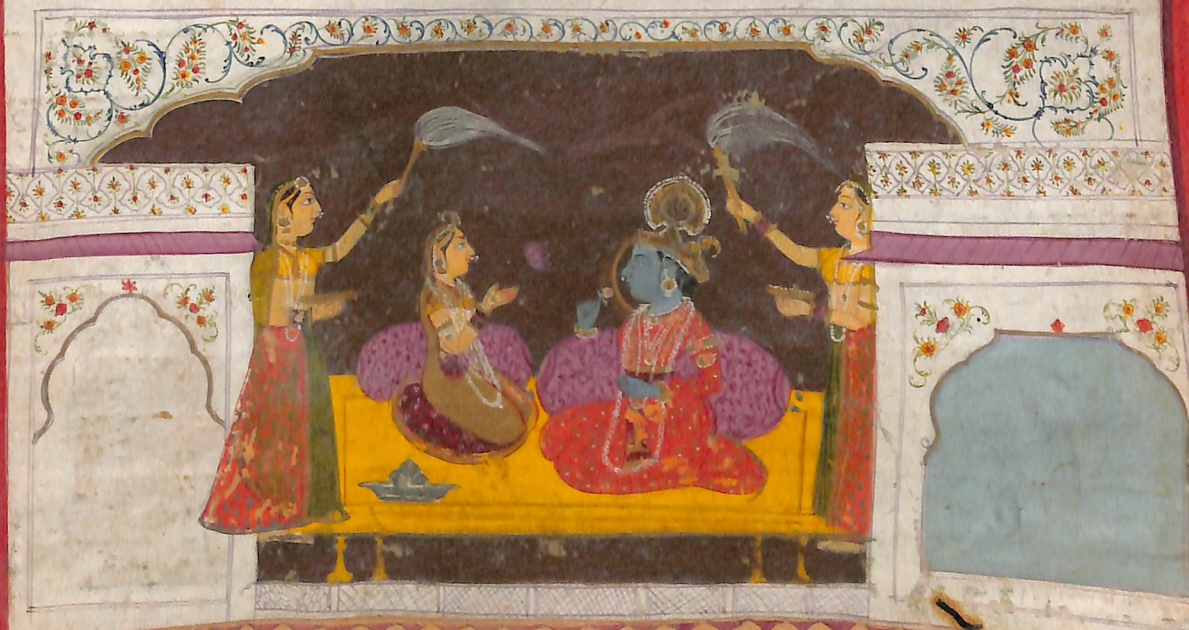
॥ २५ ॥

五

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Initiative

॥ अथ नावश्री राधा कृष्ण प्रेम मंदिर ॥ ४१ ॥

॥ देवा ॥ श्री राधा कृष्णाय नमः ॥ ॥ अथ श्री कृष्ण चरित्र पुनः वर्णनं ॥ ४
कविना ॥ जसुमति मैया नंद ववानैया वलिन प्रनंदी खर ग्रहण कलौंती
उलहनी है ॥ चंद्रिका सुआनूषन वने धैत गवाल वछ पीवां वर पटरा जै मु
रली करवनी है ॥ जमुनां के कूल कुंज हंदावन के लिपुंजना थ पुंन्य वेल्
की सुफल फल यनी है ॥ नाग की नि काई तेरी कहां लों कटों कजाई वर



सानें सुमगर राधा डुलहनी है ॥ १ ॥ श्री राधिका ॥ क ॥ कीरति दाजन
नी जनक दृषनां न श्री दा मां सहोदर जां निन बलने हउलहा ॥ लालि-
ता वि सारवाहित सहचरी संगरंग छिन छिन सुजस सुहागत रु फुल
हा ॥ कुंज पुंजर जधां नी हंदावन राती नाथ माधरी संकेत रतिके
लिय हसुलहा ॥ दिन दिन सरसां नौ वरसां नौ यो सार नंदी सुरसु
मरारि पारो कां कडुलहा ॥ २ ॥ क ॥ जयौ है विवाह चाह पूजी नंद

॥ अथ नाव श्रीदामा राधिका कौलैव चले ॥

॥ ४२ ॥

क० वि०

३९

राइजूकी सुंदरी वरू कौं देखि जसु दा सुषयाई है ॥ जनक मन कडो ले ज्यै
ज्यौं घर घर आगत में दंपति धरत पाव परम सुहाई है ॥ हीयें सुरववा-
रि श्रान्त विहसि विहसि मेरे कुल के जगाइ वे कौं कीरति की जाई है ॥
और न के मांथें या कै ए डी जाग एरी वीर कंचन के पाव डे सुजाग मेरे
आई है ॥ ३ ॥ दोहा ॥ सावन सरस सुहावन नौ जूलन कौन थोचा व ॥ श्री
दामा मां कीरति कहैं राधा कौलै आव ॥ ४ ॥ सवेया ॥ श्री दामा मां सौं
कीरति सैं कह्यो तुम जा कुन रे नंद गांव सवेरौ ॥ ले आव नरे वेटी-
राधिका कौं भगजो वत सो तो छिनो छिन तेरौ ॥ जानत हौं ओ सेरने हे
हिय पीहर की सुधि जीव जंजेरौ ॥ कृष्णावति कहि वड पात चले स
जिसंग समाज सौरंग घनेरौ ॥ ५ ॥ मैं न से बाल घनै रंग राजत वैठे-
विराजै वहलनि मांही ॥ गौनि वहल सगै न वला मन मोहिर हे लखि



दौरिनि जाही ॥ पाइ नियें जनि घंटा गै सव सो वन सीग मटे इक दां-
ई ॥ कृष्णावति कहि पडुं चे नियै नंद गांव मै म्यां तवै सुधि पाई ॥
॥ ६ ॥ मोहन याइ कौं बाल बुलाइ चले कुल साइ कौं धान सो पायौ ॥ व

लकोंवालश्रीदामाकोदेषनमोहिरह्योमनुमैनलजायौ॥गाइवजाइल-
डाइलैआइकैनंदमिलेरससिंधवढायौ॥कृष्णावतिकोंकाहुआइक
ह्योवहूराधिकारीतेरोवीरहैआयौ॥१॥आतुरकैकुलसाइचलीसुनौ
आइगएतिहिंआगनमांही॥धाइमिलीगधावीरनिसोंछविनैननिनी
रनिचीरचुहांही॥अरीमेरीमाइअरीमेरीमाइयोंरोवतकोकिलकंगल
जांही॥कृष्णावतिकहवकुस्योतिहीनांतिजसोमतिआनिकैदृजि-
नलांही॥६॥श्रीदामावाच॥कवि॥पाइलागतहैजशुरोहिनिजु
मुमहरिसुनौअसमायकहे॥पाइलागतहैतिनकोंचिरजीवोलला-
मुषसागरआजुलहे॥परयंकविछेवकुंकचनकेटिगमोतिनिजुमक
पाटगुहे॥कृष्णावतिकैहैंसबवैवेतहांअरविंदसिंधामनचंदसुहे॥
७॥पूछतराधिकानीकीहैमाइववाह्यजानहैनीकैनैया॥काकी
सुनानीवहैनिसवैपुनिफूफाहुआनदमैरहिया॥अरुपीहरकेपु
रवासीजितेसुनोआनंदछेमसदालहिया॥कृष्णावतिकहिआ-
ईघोषकुवारिदुरीसुकुवारिकहुजैया॥८॥नैननिकोरचलेच-
कुंओरकरोरतिनंदप्रियाजूकीआई॥नौहमरोंरैहसैंचितचोरैऊ-
कोरैउवैछविमोंसरसाई॥श्रीदामाकहैंअवलासवलावदैकांम
कलाकरोसोमननाई॥कृष्णावतिकहिमुसिकीसुकुवारिनलीवि
धिषेलनकीऊरलाई॥९॥स्योमकेसासरेतेआईछाकसुनोनरना
रिनिवैवतिहारी॥घरैघरवांटतहैनवनागरिहाथनिधरिजरि-
कंचनथारी॥हैंहिअसीसकहैंचिरजीवकुनंदललाह्यनानडु-
लारी॥कृष्णावतिकहैंमुषसागरआगरआनंदहोतसदाचजना-
री॥१०॥नोजनवकुपरकारसवारिकैआदरकरिसुकुवारबुला
ये॥मोतिनपंनजटीनगन्तूमिसुरंगपटमरहैछविछाये॥वैवेतहां
जलजारीनरीधरिकंचनथारनिमोदवढाये॥कृष्णावतिकहैंम
नमोहनजूकारकंकनसोहनउंचेछाये॥११॥एकडलानरिलिये

॥ अथ नाव श्री दामाजी जन्म करे है ॥ धनु ॥

म १

क० वि०

४६

फिरै संग स्याम परोत है छुबिसौं ॥ वक्र चंदन कौल विचाइ नई कर क
मलय राग श्रवै हित सौं ॥ सेव सुहार लडू अस वावर धेवर घांड न रे घु
त सौं ॥ या जे जले वीधरो सैं कुंवार जै वै सुवार न छविसौं ॥ १४ ॥ घूरी
कचोरी सुमौन दै नौन की लीजिये जूर सखा दवटै है ॥ परो सत है
दधिदारिद्र्य तात सुधी वमहा सुरजी सर सै है ॥ अच वन करि मुष
यांत नरे रंग दामि निति न सम कै सैं कै कै है ॥ कृष्ण दासी कुला ह
ल कै सैं कहै थकी सार दासो कविकै सैं कै है ॥ १५ ॥ कव हं नंद



लाल श्री दामालियें संग वावन मै जल के लिक रां वै ॥ कंदव के
घंटे में कंधनु जाधरि फूल कंद के माल बनां वै ॥ ललित लता ल
लिता तट कुंड को आइत हां मधारे स्वर गां वै ॥ कृष्ण दासी कहै
विरमं वज्र तें दिन राति सुमाहन लाडल डं वै ॥ १६ ॥ बोलिव धू
परिवार जसो मति गधिका जू अंग अंग सवारी ॥ गावत गावत गां

वकैवाहर आइसवै इकरीति निहारी ॥ गदगदकं वनयेसव कोतवधा
इचटीरथ शानपियारी ॥ कृष्णदासी कुंवारिनिहारिरही जैसै चंदहि
पायेचकोरी विचारी ॥ १२७ ॥ जानिचकोरिनि की गति आतुरफेरि
प्रियामुषचंददिषायो ॥ हरिकियोपरदारथको छिप्यो वादरमैव
ऊस्यो दरसायो ॥ जुरीसव आइकैलै हिवलाइ जनों विधिपाइ कै-



शानसिरायो ॥ कृष्णदासी विचित्र सुस्वाराथ चित्तदेधोरथको मि
कजांतिनचायो ॥ १२८ ॥ जनजननचलै जनकारकरैरथचाइ नि-
चाइ सुवच्छसुहाये ॥ छत्रीनगजालाऊमकिरहीमनिमोतिनिजो
तिमैचंददवाये ॥ पहियांनिमैयौरविलाजतुहै छवि छाजतुहा-
टकहीराजराये ॥ कृष्णदासी कुलाहलकरत कुंवारिउदारितवै
वरसानैमैआये ॥ १२९ ॥ घरैघरतेसुताधाइचली सुनिसाथनि

॥ अथ नावश्री राधिका सहली तथा मायमो

मिलहे ॥ ४५ ॥

। कृष्णवि०

रीवीरगाधिका आई ॥ नीरज ईष्ट वनान के आगन मानों सबे अब
नौनिधियाई ॥ कीरति सो लपटाई मिली पुनित्यों ही सबे मिलि-
कंवलगाई ॥ कृष्णदासी कहै वैठी माय के लाउ सोने रौरह्यो मन
मेरो सदाई ॥ ४६ ॥ कंचन थार लै आई मैया जरि जैवों प्रिया संग घो-
ष कुंवारी ॥ हास विलास करै सुषरा सिप्रका सप्रना धन दां मिनि
वारी ॥ कंचन सेतन कंजनि से मुख धंजन नैन निपै वलिहारी ॥ ज



मिलई कृष्णदासी तवै करधोइ प्रिया मुख वीरी सवारी ॥ ४७ ॥ पू-
छति है जननी मुनि राधिका मा सुनली कछुयाई है प्यारी ॥ मु-
सिकाइ लजाइ लडाइ कह्यो सुनो मा सुतो है दूजी माइ हमारी ॥ अ-
सम हरि वडी कर मो कृष्ण नौ नित वारति नृषन मोद महारी ॥ क-
सावतियों कहियी हर की ओ से रन ही दिन राति सदा री ॥ ४८ ॥
॥ दोहा ॥ राधा आई माय के बीते वक्र दिन जात ॥ एक दिना ज सुम



87



॥अथ ज्ञानवश्री कृष्णवरसांनैः ॥

॥ ४६ ॥

तिकही कृष्णचंद्रसौं वात ॥ २३ ॥ कविता ॥ एकदिनां जसुदासुनि स्या
मसौं वात कही हसि प्राण तैयारी ॥ सुतजा ऊरे अवरसांनैः कौं जहां ला
उवह मेरी रूप उज्यारी ॥ लजा इरहे मन मोहन जसुसिकाय तयौ जिय
चाउ महारी ॥ कृष्णदासी कहैं वडै प्रात चले सजि संग समाज सौरंग म-
हारी ॥ २४ ॥ आएं वरसांनै वदी छवि चूषन अवर अंग सुहाये ॥ मोर
चितेरे ऊगा दरियाई के पाग सुवान गये चल गाये ॥ पदुका पटपीन मै



सारोवनी चुनिसंघनि नूपुर नैन लुनाये ॥ कृष्णदासी करै मनुहारि
वरै पथ्य कवै मे मुख पाइ धुवाये ॥ २५ ॥ आये नट दूषनां न के पाऊने
देखियेरी चलो रूप की रासी ॥ सांवल अंग किंसां मघटा पटपीत छटा
लखि दामिनि नासी ॥ कुंडनि कुंमि आई न वना गरिना गरनै न निने
हृषकासी ॥ कृष्णदासी कहैं यह की रतिकें लगी रूप जरी वरसांन
मासी ॥ २६ ॥ मारी वसारि हा आई सवे हज सुंदर सौं हसिरंग वढौं
पादुमांन दुराइ कहैं मुकरै गुकिरी ऊँरि जै अति नैन न चंति ॥ जारी

रौषनिमोषनिजांकतिताकतिमोहननैनसिरावें॥ कछदासीकहैं
 नघोरौहैंदामिनिकीरतिजूहसिआनिछुरावें॥२७॥ जैवेंकरोरनिस्या
 मसखासंगगारिसुहावनीदेततिया॥ बाजेजलेवीपरोसैंकुवारसुहा
 रलडछविदेघैपिया॥ पकवांननयेवऊनातिनिकेअतिविंजनसर्वद
 महारसिया॥ जूठिलईकछदासीतवैवृजसुंदरजूजलयानकिया॥
 २८॥ छानिलियोपटमोहनकोऊटवयोपटकागुलचायेसवें॥ तवस
 थियेचौकसुधारिरचेस्वायनंदजसोमतिसेजअवें॥ वहिनीजुझती
 वृजसुंदरकीअरुफूफीपियासंगचित्रितवें॥ कछदासीलैआइदि
 खाइदयोमुसिकायेलजायेगुपालजवै॥२९॥ दोहा॥ आनंदमेंकेते
 दिवसवीतेवरसानें॥ वृजसुंदरवसुंदरीरसमेंसरसानें॥३०॥ सुधिआ
 ईनंदगांवकीसंगसरवानिसमाज॥ कीरतिसोंकरजोरिकैविदानयेवृ
 जराज॥३१॥ कवि॥ विरमेंवृजतेंपारीअंगसिंगारिकैगावतिगावति
 जैरेंलही॥ माइहियेलपटायरहीकछुनेहकीधूमनजातकही॥ काकी
 रुनानीवहिनिमिलीरुववामिलिप्रानसमहारनही॥ कछदासीवग
 इधियारथमेंश्रीदामानेयायुनिवैठतही॥३२॥ स्याममिलिसवसोंवड
 नेहनिमीमनवाइचलेखविमों॥ यऊंचेनदगांवतहांवडीचौरियेंदौरि
 नमों॥ कछदासीवधूमखदैहिंदियाइसुगोदजरीमुदरीमनिसों॥३
 ३॥ दोहा॥ नित्यव्याहनितरासरसनित्यअहारविहार॥ नित्यन
 वलनवनागरीक्रीडतिविविधप्रकार॥३४॥ वृंदावनवृजसंतजेव्या
 हविनीदवयाति॥ तेमिलाएकतकियेजुरीसुखलाआनि॥३५॥ प
 रमरामप्रगुनतेनिधिआनंदनिधिअधिकाइ॥ कछावतिकोदया
 निधिनीनानजनवताइ॥३६॥ दुलहनिदुलहरंगंतरमंदमधरमुस
 काइ॥ कछावतितनंदरिकैदीनीपीकबुलाइ॥३७॥ इतिश्रीक
 लचरित्रविद्याहनुमानसश्रीराधाकछकीडावनेनसंपूर्ण ३ ॥

